छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
हिन्दी मासिक मुख पत्र
मास : फाल्गुन, संवत् 2074
फरवरी 2018

ओ३म्

अंक 149, मूल्य 10

अग्निदूत

अग्निं दूतं वृणीमहे. (ऋग्वेद)

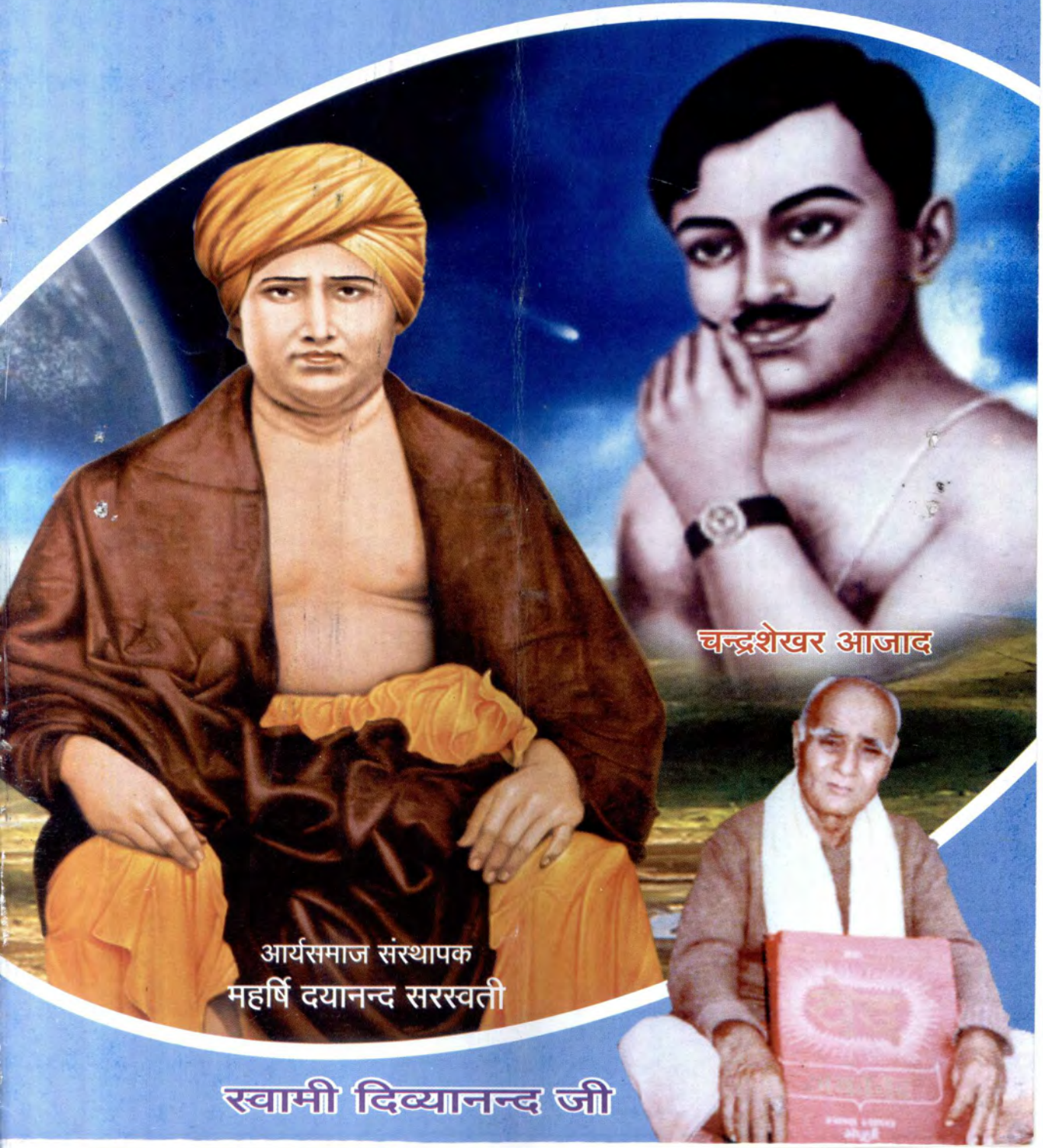

म.द.आ. उ.मा. विद्या. रायपुर में आनन्द मेला उद्घाटन करते सभा प्रधान

आर्यसमाज कांसा द्वारा आयोजित मकर संक्रान्ति पर्व एवं कृषक सम्मान समारोह की झलकियां

ग्राम किलकिला, पत्थलगांव (जशपुर) में सम्पन्न विश्व कल्याण महायज्ञ एवं वैदिक भगवत कथा की चित्रमय झलकियाँ

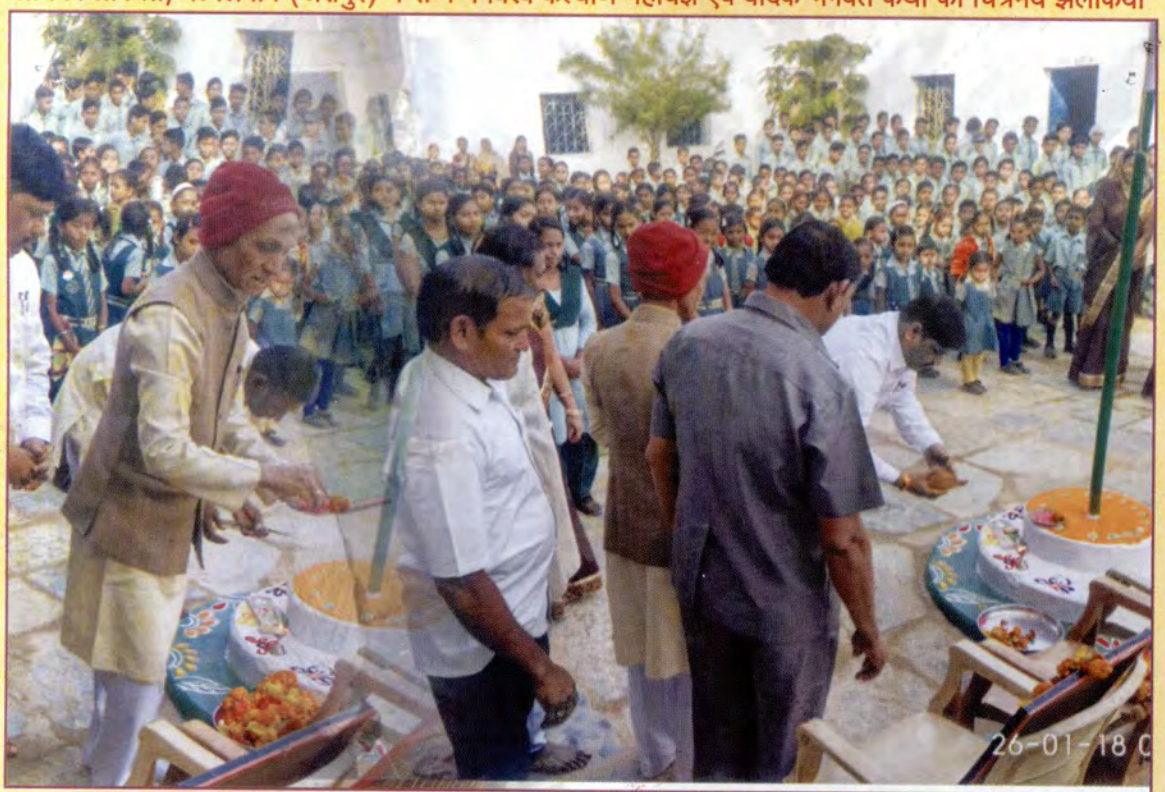

तुलाराम आर्य हाईस्कूल लवन में सम्पन्न गणतंत्र दिवस समारोह की झलकियाँ

अग्निदूत

हिन्दी मासिक

राष्ट्रीय, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनीतिक विचारों की मासिक पत्रिका

विक्रमी संवत् – २०७४
सृष्टि संवत् – १,९६,०८,५३,११९
दयानन्दाब्द – १९४

वर्ष – १३, अंक ७ ओ३म् मास/सन् – फरवरी २०१८

श्रुतिप्रणीत–सिद्धधर्मवह्निरूपतत्त्वकं,
महर्षिचित्त–दीप्त वेद–सारभूतनिश्चयं ।
तदग्निसंज्ञकस्य दौत्यमेत्य सज्ञसज्ञकम् ,
सभाग्निदूत–पत्रिकेयमादधातु मानसे ।।

: प्रधान सम्पादक :
आचार्य अंशुदेव आर्य
प्रधान सभा
(मो. ०७०४९२४४२२४)

★

: प्रबंध सम्पादक :
आर्य दीनानाथ वर्मा
मंत्री सभा
(मो. ९८२६३६३५७८)

★

: सहप्रबंध सम्पादक :
श्री जोगीराम आर्य
कोषाध्यक्ष सभा
(मो. 9977152119)

★

: व्यवस्थापक :
श्री दिलीप आर्य
उपमंत्री (कार्यालय) सभा
मो. ९६३०८०१२५७

★

: सम्पादक :
आचार्य कर्मवीर
मो. ९७५२३८८२६७

पेज सज्जक :
श्रीनारायण कौशिक

– कार्यालय पता –
छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
दयानन्द परिसर, आर्य नगर, दुर्ग (छ.ग.) ४९१ ००१
फोन : (०७८८) ४०३०९७२
फैक्स नं. : ०७८८-४०११३४२ ;
e-mail : chhattisgarhsabha@gmail.com

वार्षिक शुल्क–१००/– दसवर्षीय–८००/–

विषय – सूची

			पृष्ठ क्र.
१.	कुटिल और अकुटिल को पहचानो	स्व. रामनाथ वेदालंकार	०४
२.	मानवतावाद को स्रोत सत्यार्थ प्रकाश	आचार्य कर्मवीर	०५
३.	बोधरात्रि का प्रबुद्ध दयानन्द	आचार्या सुमित्रा विद्यालंकार	०८
४.	पाक की पाखण्डी फितरत	प्रभात कुमार रॉय	१०
५.	शिक्षा और नैतिकता पर वैदिक चिन्तन : आधुनिक सन्दर्भ में	सोमेन्द्र सिंह	१२
६.	अनुकरणीय है राम चरित्र	डॉ. बिजेन्द्रपाल सिंह	१५
७.	शिक्षण–ताड़न और शिष्टाचार	सम्पादक	१६
८.	"मजमा"	देवेन्द्र कुमार मिश्रा	१९
९.	सदाचार आपकी सम्पदा है	महात्मा चैतन्यमुनि	२२
१०.	क्रान्तिवीरों का सरताज : चन्द्रशेखर आजाद	अनिल कुमार आर्य	२४
११.	जीवनदानी वैदिक मिशनरी : दिव्यानन्द	तरुण शास्त्री	२६
१२.	होमियोपैथिक से मलेरिया और डेंगू का उपचार	डॉ. विद्याकान्त त्रिवेदी	२८
१३.	समाचार प्रवाह		३०

सूचना : छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का अणुसंकेत
(ई-मेल) E-mail : chhattisgarhsabha@gmail.com
(सम्पादक) E-mail : shastrikv1975@gmail.com

सूचना : हमारा नया वेब साइट देखें
Website : http:/www.cgaryapratinidhisabha.com

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है।

सम्पादक प्रकाशक मुद्रक – आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग के वैदिक मुद्रणालय से छपवाकर प्रकाशित किया गया।

कुटिल और अकुटिल को पहचानो

भाष्यकार - स्व. डॉ० रामनाथ वेदालङ्कार

पाकत्रा स्थान दवाः, हृत्सु जानीथ मर्त्यम्।
उप द्वयुं चाद्वयुं च वसवः ॥ ऋग्. ८.१५.१५

ऋषिः **इरिम्बिठिः काण्वः**। देवता **आदित्याः**। छन्दः **भुरिग् गायत्री** ।

● **(वसवः)** हे निवास देने वाले **(देवाः)** विद्वानो ! (तुम) **(द्वयुं च)** द्विविध को आचरणवाले कुटिल **(अद्वयुं च)** और अद्विविध आचरण वाले अकुटिल **(मर्त्यम्)** मनुष्य को **(हृत्सु)** हृदयों में **(जानीथ)** जानते हो। (तुम) **(पाकत्रा)** परिपक्व के पक्ष में **(स्थान)** होवो।

संसार में दो प्रकार के मनुष्य रहते हैं, एक द्वयु और दूसरे अद्वयु। द्वयु वे कपटीजन हैं, जिनका आचरण द्विविध है। ऐसे लोगों के मन में कुछ और रहता है, वाणी में कुछ और। मन में शत्रुता छिपी होती है, तो वाणी से ये मित्रता प्रकट करते हैं। कहते हित की बात हैं, पर मन में कूट-कूटकर अहित भरा होता है। जिह्वा से अमृत झरता है, पर मन में कालकूट विष व्याप्त होता है। दुरंगी चाल चलते हुए प्रायः ये अपनी कूटनीति में सफल भी हो जाते हैं। हम अपना सच्चा मित्र समझ इन्हें अपनी अन्तरंग बातें भी बता देते हैं, जिसका लाभ उठाकर ये अन्दर-ही-अन्दर षड्यन्त्रों का ऐसा कुचक्र चलाते हैं कि हमारा भयंकर अहित होकर रहता है। अहित होने पर उल्टे ये सहानुभूति प्रदर्शित करने आते हैं, और हम इनके विश्वास में ऐसे बंधे होते हैं कि तब भी इनका असली रुप नहीं पहचान पाते। पर कभी-कभी तो रहस्य खुलता ही है। तब हम अपने भोलेपन पर और इनके द्वयु आचरण पर खीझकर रह जाते हैं। इससे भिन्न अद्वयु वे होते हैं जो मन, वचन, कर्म में एक समान होते हैं। इनके मन में किसी के प्रति प्रेम है तो वाणी और कर्म से प्रेम ही प्रकट होगा, यदि उदासीनता है तो उदासीनता ही प्रकट होगी, यदि शत्रु भाव है तो शत्रु भाव ही प्रकट होगा। ऐसे लोग कटु सच भी बोलते हैं, तो भी वह हितकर और चेतनेवाला होता है। भले ही इनकी वाणी से अमृत न झरे, पर इनका मन शुद्ध होता है। पर हम नादान और खुशामद-पसन्द लोग इन मित्रों को शत्रु मान बैठते हैं और इनसे प्राप्त होने वाले लाभों से वंचित रहते हैं।

हे प्रजाओं में सद्गुणों का निवास करने वाले विद्वज्जनों ! तुम हमारे समान अविवेकी नहीं हो, तुम द्वयु और अद्वयु दोनों के हृदयों को पहचानते हो, जो जैसा है उसे उसी रुप में देखते हो। अतः तुम परिपक्व विचार और कर्मोवाले अद्वयु का ही पक्ष लो। जब तुम उनका पक्ष लोगे, तो हम भी उसके असली रुप को पहचान सकेंगे और हमारा समाज उससे लाभ उठा सकेगा, तथा कुटिल द्वयु से सावधान रहेगा।

संस्कृतार्थ :- १. वासयन्ति इति वसवः (वस निवासे) . २. प्रत्यक्षकृतो हितं वदति परोक्षकृतस्तु अहितं, तादृशः कपटो द्वयुः इत्युच्यते (सायणभाष्य, ऋग. ८.१८.१४)। ३. पाक प्रशस्य (निघं ३.४)। पाकः परिपक्वः। सप्तम्यर्थ में त्रा प्रत्यय। पाकत्रा पाकेषु।

सम्पादकीय

मानवतावाद का स्रोत सत्यार्थ प्रकाश

मानवता शब्द 'मानव' शब्द से भाव में 'तल्' प्रत्यय होकर बना है। मानवता का अर्थ है मानवपना मनुष्यपना। मानव और मनुष्य दोनों शब्द समानार्थक है। मनु की अपत्य को मानव या मनुष्य कहते हैं। आख्यानों के अनुसार मनु को मानव-जाति का आदिपुरुष माना जाता है, किन्तु निरुक्त की दृष्टि से मनु शब्द यौगिक है। मनन करने वाला प्राणी ही मनु है। अतः मननशील प्राणी की सन्तान मानव या मनुष्य कहलाती है। यास्क के अनुसार मनुष्य वह है, जो विचार कर- विवेकपूर्ण कार्य करते है। ऋषि दयानन्द ने भी इसी प्रकार मनुष्य का लक्षण बतलाया है - "जो विचार के बिना किसी काम को न करे, उसका नाम मनुष्य है"। ऋषि ने अपने सभी ग्रन्थों में ऐसे मानव या मानवता का विश्लेषण किया है। यहां केवल उनके सत्यार्थ प्रकाश के आधार पर ही मानवता का निरुपण करना अभीष्ट है।

मानवता का प्रथम लक्षण है :- सद्-असद् का विवेक-असत्य का त्याग और सत्य का ग्रहण। ऋषि के शब्दों में जो पदार्थ जैसा है, उसको वैसा ही कहना लिखना और मानना सत्य कहाता है। और सत्योपदेश के बिना अन्य कोई भी मनुष्य-जाति की उन्नति का कारण नहीं है। जो सत्य एवं उचित है, यदि मनुष्य उसको पहचाने, उसको स्वीकार करे और उस पर ही आचरण करे, तो वह केवल अपने जीवन को ही समुन्नत नहीं करता, अपितु समाज का यथोचित उपकार भी करता है। यह सम्भव है कि कुछ अविवेकी जन उसे बुरा समझे और उसका विरोध भी करें, किन्तु मानवता के अनुयायी उसे कभी भी बुरा न समझेंगे और अन्य जन भी समय आने पर उसके विचारों एवं आचारों का महत्व समझने लगेंगे। दयानन्द का यह विश्वास है कि मानव की आत्मा स्वभावतः ही सत्य की ओर झुकती है- "मनुष्य का आत्मा सत्यासत्य का जानने वाला है, तथापि अपने प्रयोजन की सिद्धि के लिए हठ, दुराग्रह और अविद्यादि दोषों से सत्य को छोड़, असत्य में झुक जाता है। इस कथन से सत्य ग्रहण के साधन तथा उसकी बाधाओं की भी अभिव्यक्ति हो रही है।

सत्याग्रहण के मार्ग की दो प्रमुख बाधाएँ हैं, एक अज्ञान या अविद्या और दूसरा पक्षपात। इन दोनों का परित्याग करने पर ही सत्य प्रकट हुआ करता है। अविद्या का अर्थ है मिथ्याज्ञान। "विपरीत ज्ञान अविद्या कहाता है"। विद्या और अविद्या का स्वरुप सत्यार्थ प्रकाश में इस प्रकार बतलाया गया है :-

वेत्ति यथावत् तत्त्वस्वरूपं यया, सा विद्या। यया तत्त्वस्वरुपं न जानाति,
भ्रमादन्यस्मिन् अन्यन्निश्चिनोति यया, साऽविद्या।

जिससे पदार्थों का यथार्थस्वरुप बोध होवे वह विद्या और जिससे तत्त्वस्वरुप न जान पड़े, अन्य में अन्यवृद्धि होवे, वह अविद्या कहाती है . इस अविद्या के कारण व्यक्ति विवेक को खो देता है, अतः सत्य का ग्रहण नहीं कर पाता। जब वह पदार्थों को ठीक-ठीक समझता है, तभी सत्य को ग्रहण कर सकता है।

ऐसा भी देखा जाता है कि व्यक्ति विद्वान् है, पदार्थों को जानता है, फिर भी सत्य का ग्रहण नहीं करता। ऐसा क्यों होता है ? इसमें व्यक्ति का समर्थ और दुराग्रह आदि ही प्रमुख निमित्त कहे जा सकते हैं। इन्हीं के कारण व्यक्ति जानते हुए भी सत्य को दूर भगाता है और असत्य में प्रवृत्त होता है। वह विवेकी नहीं, पक्षपाती हो जाता है। इसीलिए सत्य का ग्रहण नहीं कर सकता- जो मनुष्य पक्षपाती होता है, वह अपने असत्य को भी सत्य और दूसरे विरोधी मत वाले के सत्य को भी असत्य सिद्ध करने में प्रवृत्त होता है। इसलिए वह सत्यमत को प्राप्त नहीं हो सकता। फलतः मानव वही है जो अज्ञान तथा पक्षपात से दूर रहकर विवेकपूर्ण सत्य का ग्रहण करता है। सत्य का ग्रहण और आचरण ही व्यक्तिगत धर्म का सार है और सामाजिक कर्त्तव्यों का भी यही आधार है।

मानवता का दूसरा लक्षण है दूसरों के साथ उचित व्यवहार। यही समस्त सामाजिक धर्म का मूल है। यही समस्त सामाजिक धर्म का मूल है। सत्यार्थप्रकाश के परिशिष्ट 'स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश' में कहा गया है - "मनुष्य उसी को कहना जो मननशील होकर स्वात्मवत् अन्यों के सुख-दुःख और हानि-लाभ को समझे"। इस कथन में सभी मनीषियों द्वारा प्रतिपादित सद्व्यवहार का सार निहित है। विचारकों ने जो ***आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्*** *कहा है, वह यही तो है। सन्तों की वाणी में जो साईं सेती साँच रहू औरों से सुध भाई का उपदेश है, वह भी यही है। किन्तु उचित व्यवहार शब्द का कथन जितना सुगम है, उतना आचरण नहीं। यदि व्यक्ति अपने स्वार्थ-भाव तथादुराग्रह से ऊपर उठकर भी व्यवहार करने चले, तो भी उसके मार्ग में अनेक बाधाएँ हैं। समाज में कुछ शक्तिशाली एवं प्रभावशाली जन ऐसे होते हैं जो उसे उचित व्यवहार नहीं करने देते। वे तो प्रत्येक परिस्थिति में उसे अपना ही अनुयायी बनाना चाहते हैं। वे अपना यह अधिकार समझते हैं कि समाज का प्रत्येक व्यक्ति उनके सद् या असद् का पूर्ण समर्थन करें। सत्यार्थ प्रकाश की मानवता के यह अनुकूल नहीं है। वहां कहा गया है - अन्यायकारी बलवान् से भी न डरे और धर्मात्मा निर्बल से भी डरता रहे। सर्वथा न्याय का अनुसरण करना तलवार की धार पर चलना है। मानवजीवन की कुछ सीमाँ हैं, फिर भी मनुष्यपना या मानवता की तो यही पुकार है कि सर्वस्व चला जाए, प्राण भी चले जाएं, किन्तु सत्य और न्याय के मार्ग से विचलित न हो। ऋषि की पैनी दृष्टि से मानव की दुर्बलता भी अनदेखी नहीं रही, फिर भी उन्होने सत्य और न्याय के आचरण को ही मानवता बतलाया- जहाँ तक हो सके, वहां तक अन्यायकारियों के बल की हानि और न्यायकारियों के बल की उन्नति सर्वथा किया करें। इस काम में चाहे उसको कितना ही दारुण दुःख प्राप्त हो, चाहे प्राण भी भले ही जावें, परन्तु उस मनुष्यपन रुप धर्म से पृथक कभी न होवे।*

स्वात्मवत् अन्यों के सुख-दुःख और हानि-लाभ को समझे, इस कथन से अनेक मानवीय मूल्यों की अभिव्यक्ति होती है। सत्यार्थ प्रकाश में इसे सत्य परीक्षा की कसौटी भी कहा गया है। वस्तुतः यह सामाजिक धर्म

का मूल मन्त्र है। अहिंसा, अस्तेय और अपरिग्रह जैसे सार्वभौम धर्मों का इसमें सहज ही अन्तर्भाव हो जाता है। सत्यार्थ प्रकाश के तृतीय समुल्लास में सभी यम-नियमों का निरुपण किया गया है। वहां बतलाया गया है कि अहिंसा का अर्थ है वैरत्याग, मन वचन कर्म से चोरी के त्याग को अस्तेय कहते हैं और अपरिग्रह का अभिप्राय है - अत्यन्त लोलुपता स्वत्वाभिमान रहित होना। किसी भी मानव के लिए इस प्रकार के नियमों का पालन अनिवार्य है तभी समाज और राष्ट्र का व्यवहार सुचारु रुप से चल सकता है। अहिंसा, अस्तेय और अपरिग्रह जैसे भाव अत्यन्त व्यापक है। ये अन्यों के साथ आत्मवत् व्यवहार की व्याख्या करते हैं। शोषण, तस्करी और संग्रह की भावना को दूर कराते हैं और समाज में समता की भावना को उद्‌बुद्ध करते हैं।

इस प्रकार के मानवकर्त्तव्य-पालन में ही परहित साधन एवं परोपकार जैसा उदात्त धर्म समाविष्ट है। सत्यार्थ प्रकाश में मानव के गुणों एवं कर्त्तव्यों का विश्लेषण करते हुए अनेक स्थलों पर परोपकार का उल्लेख किया गया है। मुक्ति के साधनों में भी परोपकार को गिनाया गया है और परोपकारी जनों को ही प्रशंसनीय माना गया है। जो वेद निहित कर्मों से पराये उपकार करने में लगे रहते हैं, वे नर और नारी धन्य है। यहां मनुष्यमात्र को परोपकार करने की प्रेरणा भी दी गई है- "जैसे परमेश्वर ने सब प्राणियों के सुख के अर्थ इस सब जगत् के पदार्थ रचे हैं, वैसे मनुष्यों को भी परोपकार करना चाहिए।"

समस्त प्राणियों के प्रति आत्मवद्‌भाव मानवता का चरमोत्कर्ष है। मानवधर्म का सार यही है - **परोपकारः पुण्याय, पापायपरपीडनम्।** सत्यार्थ प्रकाश में इस भाव को विविध प्रकार से प्रकट किया गया है। वहाँ भूमिका में कहा गया है - **"जो बलवान् होकर निर्बल की रक्षा करता है, वही मनुष्य कहाता है और जो स्वार्थवश होकर परहानि मात्र करता है, वह मानो पशुओं का भी बड़ा भाई है।"** वहीं अनुभूमिका में मानव-जीवन की नश्वरता का ध्यान दिलाते हुए कहा गया है कि दूसरे की हानि मानवता नहीं है - सच तो यह है कि इस अनिश्चित क्षणभंगूर जीवन में पराई हानि करके लाभ से स्वयं रिक्त रहना और अन्य को रखना मनुष्यपन से बाहिर है।

मानवता के उपर्युक्त विश्लेषण में विविध मानवतावादी विचारधाराओं का समावेश हो जाता है। इसका मूलसूत्र विवेक है। इसमें आग्रह और पक्षपात से परे रहकर सत्य के ग्रहण की प्रेरणा है, अतः इनमें अन्धविश्वास और मिथ्या-धारणाओं को अवकाश नहीं है। व्यक्तिगत उन्नति के साथ-साथ सामाजिक उन्नति पर भी दृष्टि रखी गई है। प्राणि-मात्र के प्रति आत्मवत् व्यवहार को स्थान दिया गया है। अतः ऊँच-नीच का भेद, अपने-पराये का भेद इसमें नहीं है। इस दृष्टिकोण से दैनिक जीवन में नैतिकता आती है, आपत्तिग्रस्तों की सहायता की भावना उत्पन्न होती है और समाज तथा राष्ट्र का कल्याण अवश्वम्भावी है। समस्त सत्यार्थ प्रकाश में मानव के व्यक्तिगत तथा सामाजिक कर्त्तव्यों की विशद व्याख्या है। ईश्वर, जीव, जगत, शिक्षा-पद्धति, वर्णाश्रम-धर्म, राजधर्म और मोक्ष आदि के वर्णन द्वारा मानव-कर्त्तव्यों का ही विश्लेषण किया गया है। अन्तिम समुल्लासों में जो अन्य मतों की समीक्षा की गई है, वह भी सत्य की खोज का एक उपाय मात्र है। सत्यार्थ प्रकाश की अनुभूमिका में कहा गया है - मेरा तात्पर्य किसी की हानि या विरोध करने में नहीं, किन्तु सत्यासत्य का निर्णय करने-कराने का है..... मनुष्य जन्म का होना सत्यासत्य का निर्णय करने कराने के लिए है। अतः कहना न होगा कि सत्यार्थ प्रकाश में मानवता का सर्वाङ्गीण रुप प्रस्तुत किया गया है। आईये, सच्चे अर्थों में यदि हम मानवतावाद अपना सकें, तभी मानव जीवन सार्थक होगा।

- आचार्य कर्मवीर

बोधरात्रि

बोधरात्रि का प्रबुद्ध दयानन्द

– आचार्या सुमित्रा विद्यालंकार

कियत्यो नो जाता जगति
शिवरात्र्यो ननु पुरा ।।
कियद्भिर्नाकारि प्रथित
शिवरात्रि व्रत विधिः ।
परं साकाप्यासीद् व्रतिवर !
जगन्मंगलकरी ।
सवित्री ज्ञानानाममृतफलदात्री तव यते ।

ऋषि दयानन्द को बोध होने से पहले जाने कितनी शिवरात्रियाँ संसार में व्यतीत हो चुकी थी जाने कितने भक्तों ने व्रतों के अनुष्ठान किए थे किन्तु किसी के मन में शिव की पिण्डी पर चढ़ते चुहों को देखकर विवेक उत्पन्न न हुआ, वह तो दयानन्द की एक विलक्षण बुद्धि थी जिसने उन्हें सोचने के लिए मजबूर कर दिया जिस की वजह से दयानन्द सच्चाई जानने के लिए जंगलों की खाक छानने के लिए मजबूर हो गया। कितने कष्ट सहे। तब कही जाकर सत्य का बोध हुआ। सदियों के बाद इस धरती का सौभाग्य जागा था जब इस धरा पर दयानन्द का शुभ आगमन हुआ वह मृत्युंजय देवात्मा संसार को जगाने आया था सत्य का उद्घाटन करना ही उनका लक्ष्य था इसलिए यह शिवरात्रि सत्य बोध का पावन पर्व है। सत्य के शोधन के लिए सत्य प्राप्त करने के लिए सत्य रहस्य उद्घाटन करने के लिए उस महामानव को जाने कितनी बार जहर के प्याले पीने पड़े अपमान सहना पड़ा, कष्ट उठाए। तब कहीं सत्य की उपलब्धि हुई। उसी सत्य के प्रचार-प्रसार में सम्पूर्ण जीवन लगा दिया। ऐसा सत्य वक्ता इतिहास में मिलना दुर्लभ है।

हाय ! हम भारतीय उस योगी आध्यात्मिक पुरुष और महान क्रान्तिकारी का मूल्यांकन न कर सके। उनके योगदान तथा महत्त्व को समझ सकते, तो शायद यह हमारी दुर्दशा व दीनहीन स्थिति न होती। वह देव पुरुष जीवन भर सत्य के लिए लड़ाई लड़ता रहा। सत्य के लिए जहर पीता रहा। हर साल शिवरात्रि आती है। **मेले, जुलूस, श्रद्धांजलि में ही अपनी करुण कहानी छोड़ जाती है। कहीं भी आत्म चिन्तन, आत्म सुधार, दुर्गुण और दुर्व्यसनों से छूटने की ललक बेचैनी व पीड़ा नजर नहीं आती** जीवन में सद्धर्म, सत्यकर्म एवं सद्भाव छूटते जा रहे हैं। पाप और पुण्य सत्य और असत्य, धर्म और अधर्म की विवेचना शक्ति का निरन्तर ह्रास हो रहा है। जीवन शरीर और संसार का सत्य मृत्यु आत्मा और परमात्मा आंखों से ओझल होने लगा है। चारों ओर अधर्म पाप पाखण्ड प्रदर्शन का बोलबाला हो रहा है, चमत्कार को नमस्कार के प्रवाह में सब तेजी से बहें जा रहे हैं। पहले सामाजिक पारिवारिक व नैतिक मूल्यों का भय और सीमाएं होती थी।

उन्हें आज आधुनिकता की आंधी ने इतना दूर उड़ा दिया है कि कहीं नामो निशान भी नजर नहीं आता है। अब पाप अधर्म असत्य व अनैतिक कर्म करते हुए किसी को लज्जा और संकोच नहीं होता। यह हमारे आत्मिक पतन की चरम सीमा है . अन्दर आत्मा की आवाज को सुनने के लिए कोई तैयार नहीं है न किसी को अन्दर की आवाज सुनने की फुर्सत है।

आर्यसमाज का इतिहास साक्षी है कि इसके प्रवर्तक और अनुयाइयों के जीवन व्यवहार से तथा कार्य में सत्य कूट कूट कर भरा था। आर्यसमाज के दस नियमों में पांच बार सत्य का प्रयोग किय गया है इसी सत्याचरण, सत्याभाषण तथा शुद्ध पवित्र जीवन के कारण जनता में आर्यसमाज और आर्यसमाजियों की विश्वसनीयता टूट रही है। अब हमारे जीवन व्यवहार और आचरण में असत्य, अधर्म और अनैतिक चिन्तनपूर्ण पाप कर्म बड़ी तेजी से फैलते जा रहे हैं। उदाहरण सामने है - आर्यसमाज की

सम्पत्ति को दुकानों, स्कूलों के माध्यम से मिल बांट कर खाया जा रहा है आने-जाने के झूठे बिल बना रहे हैं। जो जहां बैठ गया हिलने का नाम नहीं लेता। करनी-कथनी का फासला बढ़ता जा रहा है उससे हमारी साख गिरी है पहचान खत्म हो रही है विश्सनीयता घट रही है। आर्यत्व छूट रहा है। खान-पान की दृष्टि से भी हमारे में गिरावट आ रही है अब आर्य समाज का संगठन दावे के साथ नहीं कह सकता कि हमारे संगठन में खाने-पीने वाले नहीं है। खानपान की दृष्टि से भी और हम सत्य से बहुत दूर होते जा रहे हैं। आर्यसमाज में बड़े लोग खूब शौक से खाते पीते हैं उन्हें आर्यसमाज का उद्धारक कर्णधार और दयानन्द के बाद सबसे बड़ा आर्यसमाज का हित चिन्तक के विशेषणों से विभुषित भी किया जाता है। क्या ये हमारी गिरावट नहीं है एक आर्यसमाजी दीवाने का यह भी संस्मरण है जब वह मृत्यु शैय्या पर था। डॉ. ने कहा आपके स्वास्थ्य के लिए दवाई के रूप में मांस का सेवन करना होगा। तो उन्होने बड़ी दृढ़ता से उत्तर दिया था - मरना स्वीकार है पर मांस का सेवन नहीं करुंगा, यह आत्मा के विरुद्ध है।

आर्यसमाज ने अपने त्याग सेवा सच्चाई और बलिदानों से संसार में अपनी अलग पहचान बनाई थी। वह पहचान अब हमारे और कर्णधारों के कर्मों से ढह रही है, धूमिल हो रही है यह चिन्तनीय और विचारणीय है पर्व हमें जगाने दिशाबोध कराने और सम्भावनाओं की प्रेरणा व चेतना देने के लिए आते हैं यदि पर्वों से महापुरुषों के जीवनों को और धर्म ग्रन्थों से कुछ नहीं सीखा तो ये हमारी ना समझी होगी। शिवरात्रि का पर्व हमें आत्म चिन्तन तथा सत्य पंथ की ओर चलने की प्रेरणा देता है। संसार में व्याप्त अज्ञान, अन्धकार, पाखण्ड, अन्धविश्वास आदि है। उनसे सत्य ज्ञान के द्वारा मुकाबला करने की भावना जाग्रत करता है। सच्चे शिव के साथ नाता जोड़ने की प्रेरणा देता है बिना प्रभु सम्बन्ध के जीवन नीरस अतृप्त अशान्त व चिन्तित रहेगा। जब तक हम जगन्नियता को कण कण में अनुभव नहीं करेगे, तब तक हम पाप कर्म से छूट नहीं सकते है। यही शिवरात्रि के जागरण पूजा व प्रार्थना का प्रयोजन है।

आज आवश्यकता है आर्यसमाज और आर्यसमाजियों के जीवन व्यवहार आचरण सभा संगठनों मन्दिरों संस्थाओं आदि में सत्याचरण की। ऋषि प्रदत्त पहचान बनाए रखने की। तभी हम दूसरों को अपनी ओर आकर्षित कर सकेंगे। तभी हम सच्चे अर्थ में ऋषि के नाम लेने के हकदार होंगे। यही शिवरात्रि प्रतिवर्ष हमें सन्देश देती है क्या हम इस सन्देश को सुनेंगे ? पालन करेंगे ? कुछ जीवन में परिवर्तन का संकल्प लेंगे ? आर्यजन थोड़ा सा विचार करें .

पता - आर्ष गुरुकुल ऐरवा, कटरा औरैया, उ.प्र.

वशीकरण -मन्त्र

लुब्धमर्थेन गृह्णीयात्, क्रुद्धमञ्जलिकर्मणा। मूर्खं छन्दोऽनुवृत्तेन, याथातथ्येन पण्डिता:॥ (चाणक्य)

भावार्थ :- नीतिशास्त्रमर्मज्ञ चाणक्य के मतानुसार निम्नाङ्कित व्यक्तियों को निम्न प्रकार से बुद्धिमान पुरुष वशीभूत करें।

१. जो लोभी पुरुष हो उसे धन के द्वारा आधीन करना चाहिए। आप उसे धन दे दीजिए वह आपका दास बन जाएगा।

२. क्रोधी जो हो उसे नम्रता से हाथ जोड़कर आप वशीभूत कर सकते हैं। क्रोधी को शान्त करने का और कोई मार्ग नहीं है।

३. मूर्ख को आप, जैसा वह बोले हाँ में हाँ मिलाकर ही अपना बना सकते हैं। तर्क-वितर्क से वह आपकी बात नहीं मान सकता।

४. पण्डितों को आप यदि अपना कल्याण चाहें तो यथार्थ स्थिति बतला दें। सत्य से बढ़कर पण्डितों को प्रसन्न करने का और कोई मार्ग नहीं है। यतः जो पण्डित है, वह तो बिना कहे-बतलाये ही सब कुछ जान जावेगा और समझ लेगा, अतएव विचक्षण पुरुष से कभी कोई बातें नहीं छिपानी चाहिए।

- सुभाषित सौरभ

राष्ट्रीय

पाक की पाखण्डी फितरत

-प्रभात कुमार रॉय

कुलभूषण जाधव को लेकर जो एक नया वीडियो पाकिस्तान द्वारा जारी किया गया, इस वीडियो से पाक के झूठे और पाखंडी प्रचार में एक नया अध्याय और जोड़ दिया गया है। नेवल कमांडर जाधव की माता और पत्नी के साथ जैसा नृशंस व्यवहार पाक सरकार द्वारा किया गया, उस दुर्व्यवहार की विश्वव्यापी निंदा हुई। पाक की राजसत्ता का वास्तविक चरित्र समस्त दुनिया के समक्ष बेनकाब हो चुका है। झूठ, फरेब और पाखंडपूर्ण आचरण पाक राजसत्ता के चरित्रगत लक्षण बन चुके हैं।

नेवल कमांडर कुलभूषण जाधव को लेकर जो एक नया वीडियो पाकिस्तान द्वारा जारी किया गया, इस वीडियो से पाक के झूठे और पाखंडी प्रचार में एक नया अध्याय और जोड़ दिया गया है। नेवल कमांडर जाधव की माता और पत्नी के साथ जैसा नृशंस व्यवहार पाक सरकार द्वारा किया गया, उस दुर्व्यवहार की विश्वव्यापी निंदा हुई। अपनी खींझ और झुंझलाहट में पाक सरकार द्वारा कमांडर जाधव को लेकर यह एक नया पैंतरा चल दिया गया। पाक हुकुमत द्वारा प्रचारित इस नए वीडियो में यह दर्शाया गया कि कमांडर जाधव को पाक आईएसआई द्वारा बिल्कुल भी प्रताड़ित (टार्चर) नहीं किया गया। यह भी दर्शाया गया कि नेवल कमांडर जाधव अभी तक इंडियन नैवी में कमीशन्ड आफिसर के तौर पर बाकायदा विद्यमान है।

पाक ने जाधव की माता और पत्नी के प्रति अपने नृशंस व्यवहार को पूर्णत) छिपाते हुए, पाक द्वारा यह प्रचारित किया गया कि एक भारतीय डिप्लोमेट द्वारा उन दोनों पर चीख चिल्लाहट की गई। नेवल कमांडर को रॉ का एजेंट सिद्ध कर देना पाक के लिए नामुमकिन है, क्योंकि कमांडर जाधव को पाक-आईएसआई द्वारा ईरान की सरजमीं से अगवा करके पाकिस्तान लाया गया और रॉ एजेन्ट होने को बेबुनियाद इल्जाम कमांडर जाधव पर लगा दिया गया। ईरान सरकार वस्तुतः कमांडर जाधव को ईरान की सरजमीं से आईएसआई द्वारा अगवा किए जाने का पुख्ता सबूतों को बाकायदा पेश कर चुकी है। भारत द्वारा इन्हीं पुख्ता तथ्यों और सबूतों को पेश किए जाने के तत्पश्चात ही इंटरनेशनल कोर्ट ऑफ जस्टिस ने कमांडर जाधव को सजा-ए-मौत पर पाबंदी लगाई थी। पाक की राजसत्ता का वास्तविक चरित्र समस्त दुनियां के समक्ष बेनकाब हो चुका है। झूठ, फरेब और धोखाधड़ी से सराबोर पाखंडपूर्ण आचरण पाक राजसत्ता के अभिन्न चरित्रगत लक्षण बन चुके हैं। पाक राजसत्ता का चरित्र मूलतः सामंती प्रवृत्ति का बना रहा है। समस्त लोकतांत्रिक कवायदों और कोशिशों के बावजूद पाक राजसत्ता पर तानाशाह वृत्ति की पाक फौज सदैव हावी बनी रही है। अपने उदयकाल वर्ष १९४७ से ही भारत पाकिस्तान का व्यवहार शत्रुतापूर्ण बना रहा है। वर्ष १९४७ में अपने जन्म के फौरन पश्चात पाक फौज ने कबाइली आक्रमण की आड़ में कश्मीर घाटी पर आधिपत्य करने की नाकाम कोशिश की। तभी से भारत और पाकिस्तान के मध्य कश्मीर विवाद निरंतर विद्यमान रहा है, जिसके कारण भारत और पाक चार युद्धों में रक्तरंजित हो चुके हैं। आमने-सामने के सीधे युद्धों में बुरी तरह से पराजित हुए पाकिस्तान ने वर्ष १९८९ कश्मीर घाटी में प्राक्सीवॉर का संचालन जारी रखा है। प्राक्सीवॉर में दोनों तरफ के करीब एक लाख से अधिक इंसानी जिंदगियां कुर्बा हो चुकी है। पाकिस्तान को आतंकिस्तान की सरजमीन के रंग में ढले एक पूरा युग गुजर चुका है। वर्ष १९७९ से १९९० तक सोवियत-अफगान युद्ध के दौर में अमेरिका और सउदीअरब की सैन्य शक्ति और पेट्रो डॉलर द्वारा पाक को आतंकिस्तान दुर्ग के तौर पर बनाया गया। सोवियत फौज तो अफगानिस्तान से नाकाम होकर वापस लौट गई, किन्तु पाक फौज ने मुल्ला

उपर के नेतृत्व में तालिबान जेहादियों को अफगानिस्तान में सत्तासीन करा दिया। अपने आका अमेरिका को बेहद खफा करके भी पाक फौज आज तक तहरीक-ए-तालिबान के जेहादियों से अपनी ऐतिहासिक दोस्ती की बाकायदा निभाती रही है।

भारत ने पाक के साथ अपने समस्त विवादों को सदैव परस्पर कूटनीतिक वार्ता से निपटाने की पहल की है। भारत ने वस्तुतः कश्मीर के जटिल विवाद पर विश्व की किसी तीसरी शक्ति की दखलंदाजी का सदैव विरोध किया है जबकि पाकिस्तान हमेशा कश्मीर विवाद का अंतराष्ट्रीयकरण करने का प्रयास करता रहा है। हाल में ही संयुक्त राष्ट्र महासभा में पाक को बड़ी कूटनीतिक फजीहत का सामना करना पड़ा। संयुक्त राष्ट्र के विहंगम मंच पर पाकिस्तान एकदम अलग-थलग पड़ा हुआ प्रतीत हुआ। पाक प्रधानमंत्री अब्बासी द्वारा यूएन में पेशकश की गई कि कश्मीर में यूएन प्रतिनिधि तैनात किया जाए। संयुक्त राष्ट्र में भारतीय कूटनीतिक मिशन की प्रथम सेक्रेटरी एनम गंभीर ने जबरदस्त जवाब देकर पाक प्रधानमंत्री को निरुत्तर कर दिया। एनम गभीर ने के प्रबल प्रतिउत्तर के तत्पश्चात् भारत की विदेशमंत्री सुषमा स्वराज ने अत्यंत शालीनता और गहनता के साथ भारत और पाकिस्तान द्वारा विगत वर्षों के दौरान अंजाम दिए गऐ कार्यो की तुलनात्मक विवेचना प्रस्तुत की। संयुक्त राष्ट्र ने कश्मीर विवाद में दखलंदाजी की पाक प्रधानमंत्री अब्बासी की दुहाई को तो पाक के सबसे बड़े हिमायती और खैरख्वाह राष्ट्र चीन द्वारा ही पूर्णतः नकार दिया, जबकि चीनी विदेश मंत्रालय के आधिकारिक प्रवक्त लू कांग पाक पीएम अब्बासी की कश्मीर में यूएन प्रतिनिधि तैनात करने की दरियाफ्त पर कहा कि कश्मीर विवाद को द्विपक्षीय वार्ता द्वारा निपटाया जाना चाहिए।

पाकिस्तान की सामंती फितरत परिवर्तित हो सकती थी, यदि महाशक्ति अमेरिका द्वारा पाकिस्तान के हुक्मरानों को एक ऐतिहासिक दौर में अंधसमर्थन प्रदान नहीं किया होता। राष्ट्रपति ट्रंप ने स्वयं बयान दिया, कि विगत १५ वर्षों में ३३ अरब डॉलर की विशाल राशि अमेरिका द्वारा पाक को प्रदान की जा चुकी है और बदले में अमेरिका को क्या हासिल हुआ धोखा और फरेब। यदि वर्ष १९७९ में विगत ३९ वर्षों का पूरा हिसाब-किताब लगाया जाए तो पाकिस्तान को अकूत पेट्रो डॉलर प्रदान किए जा चुके हैं, जिनका इस्तेमाल पाकिस्तान ने वैश्विक आतंकवाद को परिपोषित और पल्लवित करने में खर्च कर दिया। अमेरिका ने तो आखिरकार अत्यंत क्षुब्ध होकर पाकिस्तान से अपना अपना दामन छुड़ा लिया है तो फिर चीन अपना ताम-झाम लेकर पाकिस्तान का मदद के लिए आगे आ गया है, किन्तु चीन से निकट दोस्ती पाकिस्तान को बहुत महंगी पड़ेगी, क्योंकि पाक की फितरत में यदि सामंती आतंकवाद निहित रहा है तो चीन की फितरत में विस्तारवादी सदैव ही विद्यमान रहा है। भारत के विरुद्ध अपने उन्माद में पाकिस्तान अपनी राजसत्ता को चीन की गिरफ्त में धकेल सकता है। अमेरिका ने सदैव बिना किसी ब्याज-बट्टे के पाक को अकूत डॉलर प्रदान किए, किन्तु चीन अपने द्वारा किसी भी देश को प्रदान की गई ऋण राशि को आना-पाई के हिसाब से पूरा वसूल करता है। चीन के हाथों में पाक की आर्थिक गुलामी की प्रबल संभावना बन गई है। दुर्भाग्य से विश्व रंगमंच पर एकदम अलग-थलग पड़ चुके, पाकिस्तान की तो अब केवल चीन का सहारा ही शेष रह गया है। आखिर भरोसा कर लिया पाक ने फिर चीन के सहारों पर, जो लाकर डूबा देते हैं कश्तियां किनारों पर। भारत से अधिक भरोसेमंद दोस्त पाकिस्तान का कोई हो ही नहीं सकता। कश्मीर पर बलपूर्वक आधिपत्य स्थापित करने के दिवा-स्वप्न का यदि पाक परित्याग कर सके और पाक हुक्मरान परस्पर विवादों का शांतिवार्ता द्वारा निदान करने की कूटनीति का अनुपालन कर सकें तो भारत और पाक के मध्य दोस्ताना ताल्लुकात स्थापित हो सकता है।

अपने अंदर से अहंकार को निकालकर स्वयं को हल्का करें क्योंकि ऊंचा वही उठता है जो हल्का होता है।

शोधात्मक

शिक्षा और नैतिकता पर वैदिक चिन्तन : आधुनिक सन्दर्भ में

- **सोमेन्द्र सिंह,** शोध छात्र (पी.एच.डी.)
संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली

आधुनिक सन्दर्भ में प्रस्तुत विषय की नितान्त आवश्यकता है। शिक्षा में नैतिकता के बिन मानवीय मूल्यों का ह्रास-प्रतिदिन दिखायी दे रहा है। शिक्षा का मात्र उद्देश्य रोटी रोटी तथा व्यवसाय प्राप्त करना ही न होकर बालक का सर्वांगीण विकास करना है । शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक विकास से ही सर्वोन्नति सम्भव है। शिक्षा का उद्देश्य है - **'सा विद्या या विमुक्तये'** अर्थात विद्या वह है जो हमें सब प्रकार के दुःखों से विमुक्ति दिलवाए। इसलिए ऋग्वेद का ऋषि कहता है - **'मनुर्भव'** मनुष्य बनो। मानवीय गुणों - प्रेम, दया, सहानुभूति, त्याग, सेवा परस्पर सहयोग भावना, उत्तमोत्तम आचरण शिक्षा, विद्या इत्यादि शुभ श्रेष्ठ गुणों द्वारा ही मनुष्य का निर्माण सम्भव है। इसी के द्वारा समाज एवं राष्ट्र को भी मंगलमय बनाया जा सकता है। शिक्षा का वैदिक आदर्श है - **'सहनाववतु सह नौ भुनक्तु सह वीर्यं करवाव है तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषाव है'** । इस मन्त्र में शिक्षा के पांच उद्देश्य बताये हैं - शारीरिक विकास, जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति, सबका विकास, धर्म संस्कृति सभ्यता के प्रति उदात्त भावना, द्वेष भावना के स्थान पर गुरु शिष्य का आपसी सहयोग। इसी उद्देश्य को सामने रखकर शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त किया जा सकता है। ज्ञान, भक्ति और निष्काम कर्म शिक्षा के मूल तत्व है। यम और नियम के द्वारा भी समानता व एकरुपता की प्राप्ति की जा सकती है। वेद के उदात्त विचारधारा द्वारा विश्वबन्धुत्व, विश्वशान्ति, समष्टिभावना, भद्रभावना, आशावाद, निर्भयता, श्रद्धा, सामंजस्य को प्राप्त किया जा सकता है। शिक्षा का वैदिक नैतिक रुप इस वाक्य में दिग्दर्शित किया गया है - **"मातृमान् पितृमान् पुरुषो वेद"** जब तीन उत्तम माता-पिता और आचार्यगण होते हैं, तभी मनुष्य ज्ञानवान् बनता है । वैदिक वाङ्मय की उन्नति में राजा राममोहनराय द्वारा स्थापित **'ब्राह्मसमाज'** और स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित **'आर्यसमाज'** ने विशेष सक्रिय कार्य किया है। ब्रह्मसमाज का ध्यान भारतीय-गौरव रक्षा के लिए उपनिषदों की ओर बढ़ रहा है और आर्य समाज ने वैदिक साहित्य पर बल दिया। यह निःसंकोच कहा जा सकता है कि आधुनिक समय में वैदिक साहित्य एवं शिक्षा पर जो कुछ कार्य हुआ है उसमें आर्यसमाज का स्थान अग्रगण्य है।

शिक्षा के ध्येय एवं उद्देश्य के विषय में विचार करते समय हम निःसन्देह यह कह सकते हैं कि अन्तःशक्तियों को समुचित रुप से विकसित कर देना ही शिक्षा का प्रथम एवं अंतिम ध्येय है। इसी आदर्श को हृदयंगम कर वैदिक ऋषि अपनी शक्तियों के विकास के लिए परमात्मा से प्रातः सायं इस प्रकार से प्रार्थना किया करते थे- ईश्वर ! हमारी बुद्धि को सद्मार्ग में प्रेरित करो - **"धियो यो नः प्रचोदयात्"** हे अग्निदेव ! हमें आप सद्मार्ग से विश्व में ले चलें, ले ही न चले, अपितु आप हमारे हृदयों से दुर्गुण एवं पाप भावनाओं को निकालकर निष्पाप तथा शुद्ध पवित्र बुद्धि प्रदान करें, इसके लिए हम पुनः आपकी प्रार्थना करते हैं -

अग्नेनय सुपथा राये अस्मान्विश्वानि देव वयुनानिविद्वान्।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठान्ते नम उक्तिं विधेम ॥

वैदिक ऋषि पवित्र भावभूमि पर स्थित होकर पुनः बुद्धि को मेधावी बनाने के लिए ईश्वर से प्रार्थना करता है

यां मेधां देवगणां पितश्चोपासते,
तया मामद्य मेधयाग्ने मेधाविनं कुरु।

इस प्रकार बुद्धि को मेधावी बनाने के लिए ही प्रार्थनाएँ नहीं की जाती थीं, अपितु उस बुद्धि को पवित्र एवं कालुष्य रहित बनाने के लिए भी -

पुनन्तु मां देवजना पुनन्तु मनसाधियः
पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेद पुनीहि मा ॥

इस प्रकार वैदिक शिक्षा का मूल आधार मानव की बुद्धि का परिष्कार कर सुपथ का दर्शन कराना था, वस्तुतः

यही प्राचीन शिक्षा का ध्येय था। क्या आज की शिक्षा में कहीं भी इस प्रकार का पाठ्यक्रम निर्धारित है जो बुद्धि को मानवता के मार्ग का पथिक बना सके जिससे कि हम उच्च स्वर से आयु, प्राण, धन, तेज को प्राप्त करने के लिए प्रार्थना करना ना भूलें -

तेजोऽसि तेजोमयि धेहि, वीर्यमसि वीर्यमयि धेहि ।
बलमऽसिबलं मयि धेहि, सहोऽसि सहोमयि धेहि ।।

प्राचीनकाल में **'सत्यं शिवं सुन्दरम्'** के अनुसार विश्व के कल्याण कामना ही वैदिक संस्कृति का प्रयोजन था। उसकी सिद्धि के लिए ऐहिक एवं पारलौकिक उन्नति करते हुए ब्रह्म के स्वरुप में भारतीय निमग्न हो जाते थे। वह ब्रह्म तप से प्राप्त होता था- **'ब्रह्म तल्लक्ष्यमुच्यते तपसा चीयते ब्रह्म'** तथा तप की कसौटी के रुप में यम-नियमों का पालन करने के लिए एक निर्देश प्रत्येक विद्यार्थी को तो दिया जाता था, साथ ही मानव मात्र को इनका पालन करना आवश्यक था। यम के अन्तर्गत -

"तत्राऽहिंसा सत्यास्तेय ब्रह्मचर्यापरिग्रहा यमः तथा नियमों में शौच सन्तोषस्तपः स्वाध्यायेश्वर प्राणिधानानि नियमाः" अर्थात् अहिंसा, सत्य अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह तथा मन, वचन, कर्म में पवित्रता शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वर प्राणिधान। इन यम एवं नियमों की उपयोगिता, महत्व एवं अनिवार्यता के विषय में कुछ कहना उचित न होगा, वस्तुतः ये मानव को पूर्ण मानव बनाने के साधन थे। इनका आज के छात्र समाज में पूर्णतः अभाव-सा ही दृष्टिगोचर हो रहा है। जिस ब्रह्मचर्य का पालन कर देवताओं ने इच्छा मृत्यु प्राप्त की थी, उसका भी धवल यश वैदिक साहित्य में गाया गया है -

ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमुपाघ्नतः
मरणं बिन्दु पातेन जीवनं बिन्दु धारणात् ।

चरित्र की भी प्रशंसा की गई है कि चरित्र से रहित मनुष्य मृतप्रायः ही है - **'अक्षीणो वित्ततः क्षीणो वृत्ततस्तु हतो हतः'** इस प्रकार प्राचीन निर्देशों के अनुसार हम कह सकते हैं कि प्राचीन छात्र व्रती एवं तपस्वी बनकर शिक्षोपार्जन किया करते थे।

प्राचीनकाल की शिक्षा में मूल श्रद्धा की भावना थी, किन्तु आज के छात्र समाज में उसका पूर्णतः अभाव है। वस्तुततः मानव जीवन की सफलता के लिए विभिन्न तत्वों में श्रद्धा का प्रधानतम स्वार्थ है। श्रद्धा से समस्त कार्य अनायास ही सम्पन्न हो जाते हैं। श्रद्धा की भावना अपने गुरुजनों को वश में करने का सर्व-सुलभ साधन है -

श्रद्धायाग्निः समिध्यते श्रद्धया हूयते हविः
श्रद्धा भगस्य मूर्धनि वचसावेदयामसि ।

श्रद्धा भावना जब ऐश्वर्य तथा कल्याण की प्रदाता है तो क्या आज के छात्रों में श्रद्धा की भावना संचार होने पर गुरु प्रदत्त शिक्षा जीवनोपयोगी नहीं हो सकती ? अवश्य हो सकती है। आज शिक्षा के क्षेत्र में फैली विश्रृंखलता के कारण छात्रों में श्रद्धा का अभाव है। वस्तुतः श्रद्धा ज्ञानार्जन का मूलतन्त्र है, जिस श्रद्धा की भावना ने नचिकेता में यम के मुख में जाकर प्रश्न करने के साहस का संचार किया था। ज्ञानार्जन करने में नचिकेता को समर्थ बनाया था। क्या वही श्रद्धा आज की शिक्षा में जीवन में क्रान्तिकारी परिवर्तन नहीं करा सकती। संसार में श्रद्धाहीन मानव सदा से पद्दलित होते आये हैं। उनका सदा विनाश हो रहा है आज विनाश से बचने के लिए छात्र समाज को श्रद्धालु बनाने का उपाय करना चाहिए। लेकिन हम देखते क्या हैं आज का छात्र, माता, पिता एवं गुरुजनों के प्रति पूर्णतः अवज्ञा की भावना के लिए सदैव तिरस्कृत-सा करता है। यही कारण है कि उन्हीं गुरुजनों से प्रदत्त शिक्षा छात्र के लिए अभिशाप बनकर दुःखदायी ही सिद्ध हो रही है। अतः छात्रों को तपानुष्ठान का आचरण का श्रद्धशील बनाना चाहिए। वेद के शब्दों में वह व्रतपालन से ही सम्भव है -

व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षायाप्नोति दक्षिणाम् ।
दक्षिणाश्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते ।।

अर्थात् व्रत में दीक्षा, दीक्षा से दक्षिणा, दक्षिणा से श्रद्धा, श्रद्धा से सत्य। इस प्रकार क्रमशः मानव को सुपथ पर ले जाने के लिये यह एक पद्धति वेद में निर्दिष्ट है। इसका पालन कल्याण की कामना करने वाले के लिए आवश्यक है।

विद्या स्वयं ही दुष्टाचरण कर्ताओं से भयभीत रहती है। अतः उनके पास जाकर भी उनका कल्याण न कर अहित

साधन ही करती है। इस सम्बन्ध में निरुक्त के ये वचन द्रष्टव्य है - विद्या आचार्य से कहती है - हे आचार्य ! मेरी रक्षा करो, मैं तुम्हारी शरण हूं। ईर्ष्यालु, कुटिल एवं दुराचारी को मेरा दान न करो -

विद्याह वै ब्राह्मणमाजगाम गोपाय मा शेवधिष्टेऽहमस्मि,
असूयकायऽनृजवेऽयताय न मा ब्रूया वीर्यवती यथा स्याम्।

पुनश्च-विद्या उन्हें भी फलीफूत नहीं होती है जो कि गुरुओं का आदर नहीं करते -

अध्यापिता ये गुरुं नाद्रियन्ते विप्रा वाचा मनसा कर्मणावा
यथैव ते न गुरोर्भोजतीयास्तथैव तान्नभुनक्ति श्रुतंतत्।

विद्या पवित्र शुद्धाचरण कर्ता मेधावी ब्रह्मचारी को अपनी कृपा से अनुग्रहीत करती है -

यमेव विद्या शुचिमप्रमत्तं मेधाविनं ब्रह्मचर्योपपन्नम्।
यस्ते न द्रु ह्येत्कृतमच्चनाह तस्मै मा ब्रूया निधिपाय ब्रह्मन्निति निधि शेवधिरिति॥

भगवान मनु का यह वचन भी दर्शनीय है -

उत्पादक ब्रह्म दात्रोर्गरीयान्ब्रह्मदः पिताः।
ब्रह्मजन्म हि विप्रस्य प्रेत्य चेह च शाश्वतम्॥

उत्पादक पिता की अपेक्षा आचार्य अधिक महत्व का भागी होता है क्योंकि उत्पादक पिता ने तो केवल एक जन्म प्रदान किया है किन्तु इस भाव सागर से संतरण करने के लिए आचार्य ही मानव का पूर्ण व पवित्र निर्माण करता है। योगदर्शन में पंचक्लेशों को अर्थात् दुःखों का वर्णन मिलत है जिनमें अविद्या का परिगणन सर्वप्रथम किया गया है- **"अविद्याऽस्मिता रागद्वेषाभिनिवेषा पञ्चक्लेशा"** वस्तुतः अविद्या मानव को पतन के गर्त में ले जाकर यथासम्भव दुःखों से पीड़ित करती है। अतः इन दुःखों से यदि मुक्ति प्राप्त करनी है तो ज्ञानार्जन करना चाहिए क्योंकि **"ऋते ज्ञानान्न मुक्ति"** ज्ञान की प्राप्ति का एक मात्र साधन शिक्षा सम्बन्धी भारतीय विचारधारा का अनुपालन ही है। क्योंकि विद्या पात्रापात्र का विचार कर ही अनुग्रह करती है।

अतः यह निश्चित रुप से कहा जा सकता है कि शिक्षा का पूर्ण विकास राष्ट्र की संस्कृति के आधारक पर ही हो सकता है क्योंकि उसकी पृष्ठभूमि में अपने देश के आदर्शों का वरदहस्त रहता है। जिस प्रकार एक पौधा अपने अनुकूल जलवायु पर एवं मिट्टी से पृथक् हो, अन्य भूमि पर विकसित नहीं हो सकता उसी प्रकार किसी राष्ट्र की शिक्षा पद्धति अपनी संस्कृति की आधारशिला का परित्याग कर उन्नति नहीं कर सकती। वैदिक काल की शिक्षा का पूर्ण विकास इसी पृष्ठभूमि पर हुआ है।

शिक्षा के आधुनिक सन्दर्भ में वैदिक शिक्षाकालीन सूत्रों की प्रासंगिकता आज और भी अधिक बढ़ जाती है। क्योंकि आज की शिक्षा प्रणाली में केवल मात्र जीवकोपार्जन की दृष्टि को ही महत्व दिया जाने लगा है। शिक्षा का यथार्थ उद्देश्य मानव को सर्वांगीण विकास की अवहेलना स्पष्ट परिलक्षित होती है। शिक्षा में नैतिकता का संपुट अवश्य दिया जाना चाहिए। प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री डॉ. राधाकृष्णन् के अनुसार भारत सहित सारे संसार के कष्टों का कारण यह है कि शिक्षा का सम्बन्ध नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों की प्राप्ति से न रहकर केवल मस्तिष्क के विकास से रह गया है, जिस शिक्षा में हृदय, मन और आत्मा की अवहेलना है उसे पूर्ण नहीं माना जा सकता, इन शब्दों पर सभी शिक्षाशास्त्रियों को गंभीरता से विचार करना चाहिए। प्रस्तुत विषय की प्रासंगिकता नितान्त अनिवार्य है। इस पर गंभीरता से सभी शिक्षाशास्त्रियों को विचार-विमर्श करना चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :-

१. संस्कृति साहित्य का इतिहास - डॉ. बलदेव उपाध्याय
२. वैदिक साहित्य का इतिहास - डॉ. राजकिशोर सिंह
३. वैदिक वाग् ज्योति- शोध पत्रिका गुरुकुल कांगड़ी, जुलाई-दिसम्बर २०१६
४. प्रज्ञा शिक्षण शोध रचना - शोध पत्रिका, अमरोहा।
५. संस्कृति साहित्य का इतिहास - डॉ. कपिलदेव द्विवेदी।

पता : सोमेन्द्र सिंह, शास्त्री सदन, ग्राम-नित्यानन्दपुर (मितापुर) पो. शाहजहांपुर, जिला-मेरठ (उ.प्र.)

शुद्ध ज्ञान, शुद्ध कर्म, शुद्ध उपासना से ही व्यक्ति योगी बनकर, ईश्वर का साक्षात्कार कर सकता है, अन्यथा नहीं।

अनुकरणीय है राम का चरित्र

ऐतिहासिक

- डॉ. बिजेन्द्रपाल सिंह

श्रीराम भारत के इतिहास में ऐसे महापुरुष हैं, जिनका नाम अपने आदर्श व मर्यादाओं तथा कर्त्तव्य पालन के लिए भारतीय जनमानस के हृदय में आज भी अत्यन्त श्रद्धा से स्मरण किया जाता है। राम के गुणों के लिए आज भी उन्हें याद करते हैं। राम एक आदर्श मातृ-पितृ भक्त, गुरु भक्त, भ्रातृ प्रेमी, ब्रह्मचारी, कर्त्तव्य परायण, ईश्वर भक्त, राष्ट्र भक्त अच्छे मित्र, पत्नी के लिए अच्छे पति, प्रजा प्रेमी सत्य एवं न्याय प्रिय महान दिव्य गुण व आचरणों की प्रतिमूर्ति थे। क्षत्रिय धर्म का पालन सत्यता से किया। वह अस्त्र-शस्त्र विद्या में निपुण धनुर्धारी थे।

गुरु भक्त एवं ईश्वर भक्त श्रीराम :- ब्रह्मऋषि विश्वामित्र राम व लक्ष्मण को लेने के लिए महाराज दशरथ के पास आए थे, उन्होने कहा कि वन में राक्षस यज्ञ में विघ्न डाल रहे हैं, सुबाहु व मरीच यज्ञ में रक्त व मांस की वर्षा कर देते हैं, उनसे रक्षा हेतु अपने पुत्रों को भेज दें। दशरथ अपने पुत्रों को वन में भेजने से डर रहे थे, तब महर्षि वशिष्ठ ने दशरथ को रघुकुल की रीति याद दिलायी तब राजा दशरथ ने राम व लक्ष्मण को ब्रह्म ऋषि विश्वामित्र के साथ जाने की आज्ञा दी। वहां विश्वामित्र के पास दोनों भाई राम व लक्ष्मण जन सरयू के किनारे पहुंचे वह आचमन कर वहां दोनों सुकुमारों को बला व अतिबला नामक विद्या का ज्ञान कराया पश्चात संध्यादि नित्य कर्म कर सो गए। प्रातः होते ही विश्वामित्र ने संध्या व अग्नि होत्र हेतु कहा -

कोशल्या सुप्रजा राम पूर्वा सन्ध्या प्रवर्तते।
उतिष्ठ नर शार्दुल ! कर्त्तव्यं दैव माह्निकम ॥

वा. श. कां. सर्ग. २३

हे राम! उठो प्रातःकाल हो गया। यह संध्योपासना का समय है, अतः प्रातः काल का संध्या यज्ञ आदि नित्य कर्म करें। तुलसीदास जी ने रामचरित मानस में वर्णन किया है -

सकल सौच करि जाइ नहाए।
नित्य निबाहि मुनिहि सिर नाए॥
समय जानि गुरु आयसु पाई।
लेन प्रसून चले दोउ भाई॥ बालकाण्ड

सरयू किनारे जा विश्वामित्र ने दोनों भाईयो को बला अति बला नामक दो विद्याओं का ज्ञान दिया।

ऋषि बाल्मीकि ने वर्णन किया है -

ग्रहीतास्त्रोऽस्मि भगवन दुराधर्ष सुरैरपि।
अस्त्राणां त्वहमिच्छामि संहारन मुनिपुङ्गव॥

भगवान आपकी कृपा से इन अस्त्रों को पाकर मैं देवताओं के लिए दुर्जय हो गया हूँ। मुनि श्रेष्ठ अब मैं अस्त्रों की संहार विधि की विद्या ग्रहण करना चाहता हूँ। राम ने ताटका वन में अस्त्रों की संहार विधि जानने के लिए ऋषि विश्वामित्र से कहा विश्वामित्र ने राम को दिव्य अस्त्र व गदाऐं प्रदान की थीं। महर्षि विश्वामित्र ने दोनों सुकुमारों को अस्त्र-शस्त्र आदि की समस्त विद्याओं की शिक्षा प्रदान की अस्त्र भी प्रयोग करने हेतु दिए।

माता-पिता की भक्ति व आज्ञा पालन :- राम नित्य प्रति माता पिता के चरण स्पर्श कर, प्रदक्षिणा कर आशीर्वाद प्राप्त करते थे बिना माताओं व पिता के चरण स्पर्श के आगे कुछ न करते थे, पहला कार्य माता पिता का आशीर्वाद लेना ही था। जब राम को वन में जाने का आदेश हो गया तो वन गमन से पूर्व सभी माताओं की प्रदक्षिणा की थी चारों ओर नीरसता छा गयी थीं कहीं भी किसी के मुख पर प्रसन्नता न थी। ऐसे में राम न दुखी थे न ही निराशा नहीं थी, वह माता कोशल्या के पास गए तब वह संध्या में लीन थीं।

सा क्षौम वसना हृष्टा नित्यं व्रत परायणा।
अग्निं जुहोतिस्म तदा मन्त्रवत्कृत मङ्गला॥

अयो. का. स. २०

राम ने जाकर माता को प्रणाम किया।माता ने राम को उचित राजकीय रेशमी आसन दिया। तब राम बोले "माता अब मैं रेशमी आसन पर न बैठूंगा अब कुशासन ही मेरा आसन है" "पिता जी ने मुझे चौदह वर्ष वन में रहने की आज्ञा दी है।" "ऐ माता मेरे लिए अब यहां का भोजन भी करना योग्य नहीं है मेरे लिए अब यहां का भोजन भी करना योग्य नहीं है अब मैं वन में ऋषियों के आहार कन्द मूल फल का ही आहार करूंगा" इस पर कौशल्य माता अत्यधिक दुखी हुई व विलाप करने लगी।

राम न पिता की आज्ञा को शिरोधार्य कर वन में गमन ही उचित समझा और कौशल्या को समझाया कि जब तक मेरे पिता जीवित हैं, तब तक उनकी सेवा करो यही तुम्हारा धर्म है, चौदह वर्ष पश्चात तुम्हारी सेवा में उपस्थित होऊंगा तुम किसी प्रकार की चिन्ता मत करना राम का माता-पिता के प्रति अगाध प्रेम था उनकी आज्ञा का सदैव पालन करते थे।

राम का भ्रातृ प्रेम एक आदर्श :- जब राम ने अयोध्या लौटने को मना कर दिया तो भरत ने राम को अपने भ्राता से उनकी अर्थात् राम की चरण पादुका मांगी और कहा कि भ्राता की चरण पादुका राज सिंहासन पर रख भ्राता राम की ओर से राज्य शासन करूंगा राजसी सुख भोग त्याग दूंगा इसलिए महल से अलग नन्दी ग्राम में निवास करुंगा। आप चौदह वर्ष पूरे होते ही अयोध्या पधारें ऐसा न हुआ तो मैं प्राण त्याग दूंगा। भरत ने चौदह वर्ष भ्राता राम की पादुका सिंहासन पर रख शासन कार्य देखा व वनवासियों जैसा जीवन व्यतीत किया।

युद्ध भूमि में जब लक्ष्मण अचेत हो गए तो राम को लक्ष्मण की दशा देख अतीव कष्ट हुआ कहने लगे भाई लक्ष्मण के बिना मैं माता कौशल्या, कैकेयी, सुमित्रा को क्या कहूंगा मात सुमित्रा का उलाहना कैसे सहन कर सकूंगा। सुषेण न मालूम मैंने किसी पूर्व जन्म में क्या दुष्कर्म किया है जिसके फलस्वरुप मेरा धार्मिक भ्राता मेरे सामने ही मर रहा है। हम देखते हैं कि राम व लक्ष्मण भरत तथा शत्रुहन चारों भाईयों में अत्यधिक प्रेम था वह एक दूसरे को हृदय से प्रेम करते थे। राम भाईयों के लिए आदर्श थे जहां ऐसा भ्रात्र प्रेम वो वहां जीत ही जीत है विजय है सुख व शान्ति है।

राम एक श्रेष्ठ राजा व प्रजा वत्सल :- महाराजा दशरथ जब वृद्ध होने के हुए तब उन्होने अपना राज्य सिंहासन पुत्र राम को देने का ही विचार किया क्योंकि राम प्रजा वत्सल, न्याय प्रिय, मृदु भाषी, सत्याचारी, दृढ़ विश्वासी, वेत वक्ता, विद्वान, सर्वगुण सम्पन्न थे, वह जानते थे कि राजा वही हो जिसे प्रजा हृदय से चाहती हो। **राजा वै प्रकृति रजनात,** राजा वही जिस पर प्रजा प्रसन्न हो। प्रजा ने भी महराजा दशरथ से कहा -

सम्पग्विधा व्रत स्नातो यथा वत्सांगवेदवित।

हे पृथ्वीनाथ आपके पुत्र मैं राजा होने योग्य कल्याणकारी सर्वगुण है। हे प्राणनाथ वह अपने गुणों से समस्त सूर्यवंशियों में पूज्यनीय है।

तुलसीदास ने रामचरित मानस में लिखा है कि प्रजा ने राम का राज्याभिषेक सुन मंगल गीत गाए थे -

राम राज अभिषेकु सुनि हियं हरषे नर नारि।
लगे सुमंगल सजन सब बिधि अनुकूल विचारि॥

अयोध्याकाण्ड

महाराजा दशरथ कहते है - हे पुत्र जिस प्रकार जन्म से तू बड़ा है गुणों में भी तू गुणी है अपने गुणों से प्रजा को प्रसन्न कर लिया है। अतः मैं प्रसन्न हो तुझे युवराज बनाना चाहता हूँ। राम पृथ्वी पर सर्वश्रेष्ठ राजा के गुणों का भण्डार थे उनके यश के प्रताप की चर्चा दूर दूर तक थी शरभङ्ग ऋषि ने भी राम की प्रशंसा की है कि "हे राघव आप इस पृथ्वी के स्वामी हैं, देश देश में आपकी शूरता फैल रही है आज आपके समान और कोई राज्य नहीं है"।

परात्वत्तो गतिर्वीर पृथिव्यां नोप पद्यते।

अरण्य काण्ड छठा सर्ग.

राम ने कहा पूज्यगण आप इस प्रकार न कहें मैं आप सब तपस्वियों की आज्ञा का पालन करने वाला हूँ, इसलिए वन में आया हूँ।

शेष अगले अंक में

पता : चन्द्रलोक कालोनी, खुर्जा

बालक मूलशंकर ने व्रत रखा था, प्रचलित शिव को रिझाने के लिए। रिझाना तो दूर रहा, ठान ली मन में, सच्चे शिव को पाने के लिए।

बढ़ो आर्यों ! पुनः तुम्हें शिवरात्री जगाने आई है।

बढ़ो ! आर्यों ! पुनः तुम्हें ! शिवरात्री जगाने आई है ।
तुम्हें यह कर्त्तव्यों का फिर भान कराने आई है ॥

ऋषिवर के वे स्वप्न यहां पर धू-धू करके जलतें है,
ऋषि के सैनिक आज परस्पर स्वार्थवाद से लड़ते हैं ,
विस्मृत कर हम दायित्वों को, कर्मों से ही डरते हैं ,
दूसरों के ही ऊपर हमसब आग उगलते फिरते है ,
पद के झगड़े देख हमारे शर्म स्वयं शरमाई है।
बढ़ो ! आर्यों ! पुनः तुम्हें ! शिवरात्री जगाने आई है ॥

पद को ठोकर मार सपूतों । कर्त्तव्यों पर डट जाओ,
पद का लालच छोड़ सपूतों । आज पदों से हट जाओ,
दयानन्द के वीर सैनिकों , धर्म हितों में मिट जाओ,
आर्य सपूतों वैदिक पथ पर,कर तुम कार्य अमिट जाओ,
देखो !कलिका ऋषि के मन की यह कैसे मुरझाई है।
बढ़ो ! आर्यों ! पुनः तुम्हें ! शिवरात्री जगाने आई है ॥

भूल गए तुम दयानन्द के क्या त्यागों को बलिदानों को,
भूल गए हो ऋषिवर के उर के ही क्यों अरमानों को ,
भूल गए हो लेखराम,श्रद्धानन्द वीर महानों को ,
भूल गए हो युग पुरूषों के दानों को प्रतिदानों को,
आर्य समाजों के झगड़ों को दूर करने आई है ॥
बढ़ो ! आर्यों ! पुनः तुम्हें ! शिवरात्री जगाने आई है ॥

पूरे महिमंडल के हित में आर्य समाज बचाना है ,
वेदों का पथ जगतीतल को, हमको ही दिखलाना है ,
दनुज वृत्तियां भूमंडल की, हमको सहज मिटाना है ,
ऋषि दयानन्द के सपनों को अब साकार कराना है .
इसलिए उठ पड़ो आर्यो ! घड़ी नई यह आई है।
बढ़ो ! आर्यों ! पुनः तुम्हें ! शिवरात्री जगाने आई है ॥

स्व. श्री राधेश्याम आर्य विद्यावाचस्पति,
मुसाफिर खाना सुल्तानपुर (उ.प्र.)

महर्षि दयानन्द उवाच

शिक्षण-ताड़न और शिष्टाचार

सहृदय पाठक ! आपके वैदिक ज्ञान वृद्धि में सहायता करने के लिए हमने महर्षि दयानन्द रचित उनकी कालजयी रचना "सत्यार्थ प्रकाश" पर आधारित एक विचार माला प्रस्तुत करने की शुरुआत की है, जिसका शीर्षक "महर्षि दयानन्द उवाच है" पाठक स्वयं पढ़ें अन्यों को प्रेरित करें। (सम्पादक)

सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय समुल्लास में महर्षि दयानन्द सरस्वती ने बच्चों की शिक्षा के बारे में उपदेश किया है और मनुस्मृति के अनेक श्लोकों के द्वारा समझाने का प्रयास किया है कि माता-पिता ही अपने बच्चों के शत्रु और सबसे बड़े मित्र होते हैं। इस बात का खुलासा करते हुए महर्षि बताते हैं कि माता-पिता तथा अध्यापक लोग ईर्ष्या, द्वेष से (अपने बच्चों का) ताड़न न करें किन्तु ऊपर से भयप्रदान और भीतर से कृपा दृष्टि रखें। इसका यह अर्थ कदाचित् नहीं है कि बच्चों के मन में माता-पिता का डर घर जाए या इससे बच्चें इतना डर जाएँ कि वे बीमार ही पड़ जाएँ। कहने का तात्पर्य यह है कि माता पिता और अध्यापक का हर प्रकार से ध्यान रखें और कभी कभी जब बच्चे गलती करें (किसी दुर्व्यसन में ग्रस्त न हो जाएँ) तो थोड़ी डांट भी लगाएँ और फिर उन्हें प्रेम से अवश्य समझाएँ कि उन्होने कहां गलती की है ताकि वे अगली बार वैसी गलती न करें। डांट लगाएं मगर प्यार से, अपने बच्चों से ईर्ष्या-द्वेष से ग्रस्त होकर शत्रु की भान्ति व्यवहार न करें क्योंकि आखिर वे उनके अपने ही बच्चे हैं, उन्हें हित और सुधारने की दृष्टि से समझाएँ। कई बार माता-पिता अपने बच्चों को इतना पीटते हैं, कि बच्चे सुधरने के बजाय और अधिक बिगड़ जाया करते हैं। अतः बच्चों को ताड़न करते समय अन्य बातों का भी ध्यान रखना चाहिये। यदि बच्चों को बाल्यावस्था से ही अच्छे संस्कार दिये जाएँ तथा अंकुश और आदेश में रखें तो बच्चे कुकर्म-गामी नहीं बनते और सदा माता-पिता की आज्ञा में रहते हैं। सब माता-पिता अपने बच्चों से यही अपेक्षा रखते हैं कि उनके बच्चे सदा सुखी रहें- स्वस्थ रहें-जीवन के हर क्षेत्र में सफलता प्राप्त करें और अधिक से अधिक उन्नति करें।

भारत में हर साल तम्बाकू से जाती हैं लाखों जानें

तम्बाकू और धूम्रपान से लाखों जिन्दगियाँ तबाह हो जाती है। तम्बाकू सेवन के कारण स्वास्थ्य पर पड़ने वाले दुष्परिणाम और उनसे होने वाली जानलेवा बीमारियों पर लोगों के करोड़ों रुपये खर्च हो रहे हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन के आंकड़ों के अनुसार धूम्रपान और तम्बाकू के कारण दुनिया में प्रतिवर्ष लगभग ४० लाख से अधिक लोग मौत का शिकार हो जाते हैं। भारत में भी यह संख्या लगभग ८ लाख है। अनुमानतः ९० प्रतिशत फेफड़ें के कैंसर, ३० प्रकार के अन्य कैंसर ८० प्रतिशत ब्रोकाइटिस एवं २० से २५ प्रतिशत घातक हृदय रोगों का कारण धूम्रपान है।

- अनिल कुमार आर्य

विश्लेषणात्मक

''मजमा''

- ले. देवेन्द्र कुमार मिश्रा

मंदिर के बाहर बहुत से भिखारी बैठे हुए थे हमेशा की तरह। उनके कपड़े फटे हुए। बाल उलझे हुए और शरीर हड्डियों का ढांचा मात्र था । दाढ़ी बढ़ी हुई थी । सभी भिखारियों की स्थिति एक ही तरह की थी। उनमें एक-दो भिखारी ऐसे भी थे। जिनका मानसिक संतुलन बिगड़ा हुआ था। हर भिखारी के पास एक एल्युमिनियम की थाली और प्लास्टिक का गिलास था। एक-दो जिनका मानसिक संतुलन ठीक नहीं था। उनके पास कुछ नहीं था । जब कोई भक्त मंदिरों से निकलकर उन्हें कुछ देता तो वे पहले एकटक उन्हें ताड़ते। कई बार रोटी हाथ में ले लेते। कई बार फेंक देते। जिन्हें पास खड़े कुत्ते फौरन लपक लेते। भिखारियं के पास जब भक्तगण आते तो वे थाली आगे बढ़ा देते। थाली में उन्हें मंदिर का प्रसाद , चिल्हर रुपये के साथ शाम को होने वाली भंडारे से भोजन भी मिल जात। हनुमान जी का मंदिर था। लेकिन मंदिर में अन्य देवी-देवताओं की मूर्तियां भी विराजमान थीं। मंदिर परिसर बहुत बड़ा था। सड़क से ३०० मीटर अन्दर बने इस मंदिर के चारों तरफ आम, पीपल, बरगद के बड़े-बड़े वृक्ष थे। शनिवार और मंगलवार को विशेष भीड़ रहती। कभी कोई बड़ा आदमी अपनी मन्नत पूरी होने पर या किसी ज्योतिषी के बताये उपाय के लिए आता। भिखारियों में कपड़े बांटता। उन्हें स्वादिष्ट भोजन देता। आस-पास मंडराते कुत्तों को रोटी डालता गायों को हरी घास या घी लगी रोटी खिलाता।

आज शनिवार था। शाम के भंडारे का भोजन बट चुका था। भिखारी कतारबद्ध होकर हमेशा की तरह मंदिर के पास वाले लम्बे चबूतरे में बैठे थे। यहीं उनका रहना खाना-सोना होता था। जब बरसात होती तो ये भिखारी मंदिर के पीछे बनी घास-फूस की झोपड़ी में लेट जाते। जहां पर गायें बंधी रहती थी, मंदिर ट्रस्ट की और एक-दो जो पागल थे। उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता था। कोई दयावश उन पर पालीथीन डाल जाता। जिससे उनके आधे से अधिक शरीर ढंक जाता। आज के भंडारे का भोजन बंट चुका था। एक भिखारी बाकी भिखारियों से दूर पीपल के पेड़ के नीचे भोजन कर रहा था। उसने अपने से कुछ दूर एक नौजवान को देखा। वह उसे चेहरे से अच्छे परिवार का दिखाई दिया। लेकिन बाकी हुलिया उसका भिखारियों जैसा ही था। वह भिखारी के भोजन की तरफ ललचाई नजरों से देख रहा था। भिखारी ने उसे इशारे से बुलाया। युवक उसके पास आया। भिखारी से पूछा - देर हो गई तुम्हें। लंगर तो बंट चुका। भूख लगी होगी। आओ मेरे साथ खा लो।

युवक भिखारी के पास बैठ गया। भिखारी ने उससे कहा - "खाओ बेटा।" युवक की आंखों में आंसू आ गये।

"तुम्हें पहले तो यहां कभी नहीं देखा।"

"जी कई दिनों से भटक रहा हूं भूखा-प्यासा।" "कोई काम नहीं किया।" भिखारी ने पूछा।

"जी, मैंने काम की तलाश की। होटल में बर्तन मांजे। मजदूरी की, लेकिन काम ज्यादा दाम कम। उस पर ढेरों गालियां। मुझसे अपमान बर्दाश्त नहीं हुआ और मैं काम बदलता रहा। छोड़ता रहा। भटकते-भटकते इस मंदिर में आ गया।" युवक ने कहा जो भिखारी के साथ भोजन कर रहा था।

"क्या नाम है" भिखारी ने पूछा।

"हरिराम" "और आपका"

"भिखारी का नाम नहीं होता। वह सिर्फ भिखारी होता है। नाम हो गया तो फिर भिखारी कहा रहे ? सच कहूं तो मैं अपना नाम भूल चुका हूं। तुम्हारी बातों से लगता है कि तुम पढ़े-लिखे हो। चेहरे से लगता है। अच्छे घर के हो। फिर ये हालत कैसे हो गई ?"

"पढ़-लिखकर।"

"नौकरी, काम धंधा।" भिखारी ने पूछा।

"नौकरी मिली नहीं। व्यापार के लिए रुपया-

पैसा नहीं है। माता-पिता रहे नहीं। किराये कामकान छोड़ना पड़ा। धन के अभाव में। न पिताजी के पास कोई जमा पूंजी थी न खेती-बाड़ी न खुद का मकान। मजूरी करते थे पिताजी। एक कमरे के मकान में किराये से रहते थे। मैं नौकरी तलाशते थक गया और माता-पिता मेरी असफलता से टूट कर स्वर्ग सिधार गये।"

"आगे क्या इरादा है।" "सोच रहा हूँ भिक्षा मांगू।"

"भीख मांगना कोई आसान काम नहीं है। बहुत अपमान, धिक्कार सहना पड़ता है। हरदम उदास, मायूस चेहरा बनाये रखना होता है। कई बार तो लोग उपदेश देकर चले जाते हैं। कई-कई दिन तक पानी पीकर गुजारा करना पड़ता है।" भिखारी ने समझाते हुए कहा।

"मैं आपसे सीखूंगा।"

"सीखने भी आये तो भीख मांगना। तुम्हें देखकर तो और लोग कहेंगे कि हट्टे-कट्टे जवान आदमी हो काम क्यों नहीं करते। भीख मांगते शर्म नहीं आती।"

"तो क्या करूँ बाबा।"

"सह सकोगे अपमान।" "शायद नहीं।"

"फिर तो भूखा मरना पड़ेगा।"

भोजन समाप्त हो चुका था। भिखारी ने कहा - "आओ पानी पीते हैं।" भिखारी पास लगे सार्वजनिक नल से गिलास में पानी भरने लगा। युवक ने भी चुल्लु से पानी पिया। इसके बाद दोनों बरगद के नीचे बैठ गये। भिखारी ने कहा - "कुछ बड़ा सोचो। मैं तुम्हारी सहायता करूंगा। भिखारी बनकर क्यों अपनी जवानी बर्बाद कर रहे हो ? फिड़ ठंड, गमीई, बरसात कैसे सहन कर पाओगे ? कभी-कभी हम भिखारियों को यहां से खदेड़ भी दिया जाता है। मंदिर ट्रस्ट के लोग पीट भी देते हैं कभी-कभी।"

युवक सुनता रहा। भिखारी ने कहा - "तुम ऐसा क्यों नहीं करते कि कोई अपराध करके जेल चले जाओ। वहां तुम्हें सरकार की तरफ से दोनों वक्त भोजन, चाय, नाश्ता सोने के लिए कम्बल सब मिलेगा।"

युवक ने कहा - "ऐसा आपने क्यों नहीं किया?" मैंने किया था एक बार भिखारी ने कहा - "पर जेल के अन्दर बड़े-बड़े खूंखार अपराधी होते हैं। वे हमें गुलाम बनाकर रखते हैं। अपने पैर दबवाते हैं। सेवा करवाते हैं। अपने कपड़े धुलवाते हैं। फिर जेल विभाग भी काम सौंपता है। सड़ा-गला भोजन मिलता है और कैद फिर कैद होती है। एक-एक बीड़ी के लिए तरस जाते हैं।"

"तो फिर मुझे आप ये सलाह क्यों दे रहे हैं। कुछ और बताइये।" युवक ने कहा।

भिखारी ने कुछ क्षण सोचा फिर कहा - "लोग चमत्कार को नमस्कार करते हैं। थोड़ा कष्ट सहो। कुछ हाथ की सफाई सीखो। फिर देखो कुछ ही दिनों में भक्तगण मंदिर में जाने से पहले तुम्हारे पास आने लगेंगे। संस्कृत के कुछ मंत्र, श्लोक आते हैं।"

"हां आते हैं।" युवक ने कहा।

"मैं तुम्हें कुछ सिखाता हूँ। हाथ की सफाई जैसा।" "आपको आता है तो फिर आपने क्यों नहीं किया?"

"मैं पहले से भिखारी हूं। यहां हाथ की सफाई दिखाने वाला एक लड़का आया था रहने के लिए मंदिर में। रहने का किराया भी देता था। उसी से सीखा मैंने। मुझे लोग उस रुप में स्वीकार नहीं करेंगे। तुम गये हो। संस्कृत के श्लोक मंत्र भी जानते हो।"

भिखारी ने युवक को हाथ घुमाकर पेड़ा, लड्डू, भभूत निकालना सिखाया। जिसे युवक ने दो-तीन घंटे के प्रयास में सीख लिया। भिखारी ने रात भर इधर-उधर कांटो भरी डालें तोड़ी और उनका बिस्तर बनाकर कहा - "ये इस तरह से बनाया है कि लोगों को लगेगा कि तुम कांटो पर लेटे हो। लेकिन ये कांटे तुम्हें चुभेंगे नहीं। एक-दो चुभ भी जाये तो चिन्ता मत करना। कुछ पाने के लिए कुछ सहना भी पड़ता है।"

"कहीं आप मुझे साधु तो नहीं बना रहे हो।"

"ठीक समझे तुम। तपस्वी साधु जो लंगोट पर कांटो के बिस्तर पर लेटा ध्यानस्थ है। तुम्हें अपनी आंखें आधी बन्द आधी खुली रखना है। कोई आये तो उसे संस्कृत में आशीर्वाद देना है। लेकिन ध्यान रहे जो भी चिल्हर पैसे या रुपये तुम्हें प्राप्त हो उनमें से आधे मुझे देना होगा।"

"तुम्हें विश्वास है कि लोग मुझपर विश्वास

करेंगे।" "हाँ, मैं इस देश के भक्तों को जानता हूँ।"

और दूसरे दिन से तमाशा शुरु हो गया। युवक जिसका नाम हरिनाम था। वह लंगोट में कांटो के बिस्तर पर लेटा था। आंखें उसकी ध्यानमुद्रा में थी। कुछ दिन तो लोगों ने देखा आश्चर्य से। फिर चिल्हर पैसे चढ़ाने लगे। कुछ दिनं बाद हरिराम के पैर छूने लगे। एक को देखकर बाकी भी करने लगे। लोगों में चर्चा शुरु हो गई कि कोई तपस्वी है। फिर लोग बैठकर अपनी व्यथा-कथा अपने दुख-दर्द सुनाने लगे। हरिराम उन्हें हाथ की सफाई से भभूत, पेड़े, लड्डू देने लगा। भक्तों की भीड़ आश्चर्य चकित हकोर हरिराम के सामने नतमस्तक होने लगी। चिल्हर की जगह अब नोट आने लगे। जिसे रात में भिखारी और हरिराम आपस में बांट लेते। कांटों के बिस्तर पर युवक हरिराम को राजसी आनन्द मिलने लगा। लोग पैर पड़ रहे हैं। आशीर्वाद ले रहे हैं। मंदिर में जाने वाली भीर उसके पास आने लगी। इससे मंदिर का पुजारी और मंदिर कमेटी के लोग चिढ़ने लगे। मंदिर की आमदनी में गिरावट होने लगी। हरिराम पर महंगा चढ़ावा चढ़ने लगा। फल-फूल, प्रसाद, मिठाई का ढेर लगने लगा। भिखारी उसके जूनियर की तरह उसके पास रहने लगा। उनके पास काफी रुपया जमा हो गया। शहर के बड़े अखबार के पत्रकारों ने अपने कवर पृष्ठ पर बाबा हरिराम की फोटो प्रकाशित की। हरिराम अब बाबा हरिराम हो चुके थे। लोगों ने ये भी तय किया कि बाबा के लिए एक कमरा बना दिया जाये। जब ये खबर मंदिर के पुजारी और ट्रस्ट को पता लगी, तो वे बौखलाकर एक जगह इकट्ठा हुए। मीटिंग हुई। रात के अंधेरे में भिखारी को मंदिर के गुप्त कक्ष में जबरदस्ती ले गये। उसके साथ मारपीट करके पूछा गया कि बताओ कौन है वह आदमी ? उसकी सच्चाई क्या है ? पहले तो भिखारी ने तारीफ की। उसे पहुंचा हुआ सन्त बताया। जब पुजारी ने गुस्से में कहा - "पहुंचा हुआ सन्त तुम्हारे जैसे भिखारी के साथ रात में हिस्सा नहीं बांटता। या तो तुम बताओगे या तुम्हारी लाश बाहर जायेगी। फिर भिखारी को थर्ड डिग्री टार्चर शुरु किया गया। उसे लाठी-जूतों से पीटा गया। भिखारी ज्यादा देर तक सह न सका। उसने सच्चाई बयान कर दी। तुरन्त ही उस युवक को योनि बाबा हरिराम को मंदिर के गुप्त कक्ष में घसीटकर लाया गया। मंदिर के पुजारी ने कहा - यदि चार सौ बीसी के केस में अन्दर नहीं जाना चाहते हो तो तुरन्त ये शहर छोड़ दो। यदि तुम्हारे भक्तों को तुम्हारी सच्चाई बता दी तो वे ही पीट-पीटकर मार डालेंगे।"

दोनों घबरा गये। उन्होंने रात में ही शहर छोड़ने का आश्वासन दिया। दूसरे दिन भक्तों की भीड़ बाबा हरिराम को तलाश रही थी। और बाबा गायब थे। भक्तों ने मंदिर के पुजारी से पूछा। पुजारी जानता था कि सच्ची बात पर अंधे भक्त विश्वास नहीं करेंगे। उन्होंने गंभीर मुद्रा में कहा - साधु-संत एक जगह कहां टिकते हैं ? सुना है कि हिमालय की ओर जाने के इच्छुक थे। अब पता नहीं कहां गये ?"

कुछ दिनों बाद भक्तों की भीड़ा बाबा हरिराम को भूल गई और पुनः मंदिर में आने लगी। मंदिर ट्रस्ट ने बाबा हरिराम के कांटों को बिस्तर की जगह एक छोटा सा चबूतरा बना दिया। जिसका चढ़ावा ट्रस्ट के पास आने लगा। दोनों ट्रेन के ए.सी. कोच में बैठे आराम कर रहे थे। बाबा हरिराम ने भिखारी से पूछा - "अब क्या होगा ?"

भिखारी जिसकी हालत अब काफी सुधर चुकी थी। बहुत सा रुपया उनके पास था। भिखारी ने कहा - "चिन्ता मत करो कोई अच्छी सी जगह देखकर थोड़ा तरीका बदलकर फिर मजमा लगायेंगे।" क्या हम दूसरी जगह भी सफल होंगे युवक ने चिंतित स्वर में पूछा।

भिखारी ने हंसते हुए कहा - "हरिराम ये धंधा दुनियां में कहीं भी सफल हो सकता है। इसकी पक्की गारन्टी देता हूँ। बस अपने ही जैसे धंधेवालों से बचना जरुरी है। किसी मंदिर-मस्जिद, धार्मिक स्थान से दूर लगाना होगा मजमा। सफलता में कोई संदेह नहीं है। दोनों जोर से हंसने लगे। भिखारी ने महंगी वाली सिगरेट सुलगाई। हरिराम ने भी एक साथ कश लगाये। ट्रेन अपनी रफ्तार से भाग रही थी और उसी रफ्तार से दोनों का दिमाग चल रहा था कि अगला मजमा कहां, किस तरह शुरु किया जाये ?"

पता : पाटनी कालोनी, भरतनगर, चन्दनगाँव, छिन्दवाड़ा (म.प्र.)

उपादेयात्मक

सदाचार आपकी सम्पदा है

- महात्मा चैतन्य मुनि

यह एक ध्रुव सत्य है कि दुराचारी कभी भी अपने जीवन में सुखी नहीं हो सकता है। वास्तव में सुख-दुःख का आधार आदमी के सद्विचार व ही होते हैं। कुविचारी भले ही स्वयं को कुछ समय के लिए सुखी समझ ले मगर वह वास्तविक व स्थाई सुख से सदा वंचित ही रहता है। वह स्वयं तो सुख, शान्ति तथा आनन्द से वंचित रहता ही है मगर वह अपने परिवार, समाज और देश के लिए भी अन्ततः किसी न किसी प्रकार से दुःखदायी ही सिद्ध होता है। दुराचारी न स्वयं तृप्त रह सकता है और न ही किसी दूसरे को तृप्त कर सकता है। इसके विपरीत सदाचारी संसार में समस्त सुखों को प्राप्त करता है.... वह स्वयं तो सुखी होता ही है मगर वह अपने सम्पर्क में आने वालों को भी सुख और शान्ति प्रदान करता है। दुराचारी व्यक्ति पर कोई विश्वास नहीं करता है मगर सदाचारी पर सभी विश्वास करते हैं.... वह सबका प्रिय होता है... उसे माँ-बाप और बड़े लोगों तथा आचार्यों का प्रेम व आशीर्वाद प्राप्त होता है। दुराचारी अपने शरीर का तो नाश करता ही है मगर साथ ही वह अपने मन और बुद्धि को भी विकृत कर लेता है। यह विकृत मन और बुद्धि उसे अन्ततः कहीं का नहीं छोड़ती है तथा वह व्यक्ति सर्वनाश को प्राप्त हो जाता है।

सदाचार वास्तव में है क्या ? **सतामाचारः सदाचारः** अर्थात् सत्पुरुषों, श्रेष्ठ जनों के शास्त्र समस्त आचार एवं सद्विचारों का नाम ही सदाचार है। **सदाचार का परिभाषित अर्थ है** - शास्त्रविहित शुभ कर्मों को निरन्तर करना। इस प्रकार हम देखें तो सदाचार में अनेक बातों का समावेश होता है, जैसे उत्तम ग्रन्थों का स्वाध्याय करना, सदा उच्च विचार रखना, उत्तम व्यवहार करना, अपने चरित्र को ऊँचा उठाना, शिष्टाचारी होना, सत्य और धर्म का ही अनुपालन करना तथा परमात्मा पर अटूट श्रद्धा, समर्पण और विश्वास का होना आदि। इसके साथ-साथ अन्य व्यवहारिक बातों का अनुपालन करना भी सदाचार के ही अन्तर्गत आता है। एक बहुत ही सार्थक, सुन्दर तथा उत्तम उक्ति है, **- सादा जीवन उच्च विचार**। हम जिस भी महापुरुष का जीवन देखें, उन सब में यह विशेषता रही है। सदाचारी पुरुष अपने बाहरी दिखावे की ओर ध्यान नहीं देता है बल्कि अपने अन्तर की ओर ही उन्मुख रहता है। वह बाहर का श्रृंगार करने के स्थान पर अपने आपको भीतर से श्रृंगारित करने के ही कार्य करता है। हमारे नीति ग्रन्थों में सदाचार को ही व्यक्ति का सर्वोत्कृष्ट तथा सर्वोत्तम सौन्दर्य बताया है।

सदाचारी व्यक्ति प्रतिक्षण आत्मनिरीक्षण करता रहता है किमेरे अन्तःकरण पर कोई किसी प्रकार की भी मलीनता न आ जाए... वह सदा कुसंगति से दूर रहता है, कुसंग से वह ठीक इसी प्रकार डरता रहता है जैसे किसी जहरीले सांप से डरा जाता है वह जानता है कि सांप का डसा तो भले ही बच भी जाए मगर कुसंग का डसा हुआ सर्वथा बर्बाद हो जाता है... यह जागरुकता ही उसे पग-पग पर बचाती रहती है और वह अपने सदाचार पर किसी प्रकार की भी आंच नहीं आने देता है। साधारण व्यक्ति बार-बार अपना सौन्दर्य देखने के लिए शीशा देखता रहता है मगर वास्तविक सौन्दर्य तो सदाचार ही है... प्रदीप जी ने बहुत ही सुन्दर एक गीत लिखा है - **मुखड़ा क्या देखे रे दर्पण में, जरा दया धर्म नहीं तेरे मन में ....** 'दुराचारी व्यक्ति की तो ठीक ऐसी ही स्थिति होती है - उमर भर बस यही गलती करता रहा, धूल चेहरे पर थी और आईना साफ करता रहा ...।'

सदाचारी व्यक्ति का जीवन में चतुर्दिक उत्थान होता है क्योंकि उसे स्वयं अपने चरित्र, सत्य धर्म और परमात्मा पर पूरा-पूरा विश्वास, श्रद्धा और समर्पण होता है। वह स्वयं तो उन्नति करता ही है मगर वह दूसरे की उन्नति से

भी दुःखी नहीं होता है। दूसरे की उन्नति को देखकर जलने वाले का नाश हो जाता है, बल्कि यूं कहें कि - **असूया प्रथमं पदं मृत्योः अर्थात्** असूया मृत्यु की ओर प्रथम कदम है.. हमारे ग्रन्थों में बहुत ही सुन्दर-सुन्दर शिक्षाप्रद घटनाएँ तथा प्रसंग आते हैं... महाभारत में एक प्रसंग आता है कि जब महाराज युधिष्ठिर जी ने राजसूय यज्ञ रचाया तो दुर्योधन आदि सभी लोग भी उसमें आमंत्रित किए गए थे। उन्हें विधिवत् व्यवस्था का हिस्सा बनाया गया था। दुःशासन ने भोजन आदि की व्यवस्था को संभाला था और दुर्योधन आए हुए राजा-महाराजाओं का स्वागत करता था मगर वहां उसके मन की ईर्ष्या ने और भी अधिक विकराल रुप धारण कर लिया। उसने देखा कि सोना, चांदी, हीरे और जवाहरात आदि भेंट दिए जाते थे.. दुर्योधन उन्हें ग्रहण तो करता था मगर वे धर्मराज के कोष में चले जाते थे। उस रात जब दुर्योधन सोने के लिए अपने कक्ष में गया तो उसको नींद नही आ रही थी। शकुनि का कक्ष भी पास में ही था। जब शकुनि ने आधीर रात को देखा कि युवराज के कक्ष में रोशनी जल रही है तो वह दुर्योधन के कक्ष में गया। उसने दुर्योधन से पूछा कि युवराज अब तक सोए क्यों नहीं ? दुर्योधन ने उत्तर दिया कि मामा जी मुझे नींद नहीं आ रही है। शकुनि ने पूछा कि क्या कोई शारीरिक कष्ट है.. तो मैं किसी वैद्य को बुलाने की व्यवस्था करता हूं। दुर्योधन ने एक गहरा सांस लेते हुए कहा कि मामा जी मुझे नींद न आने का कारण कुछ और है, इसका उपचार कोई वैद्य नहीं कर सकेगा.. मुझे युधिष्ठिर के मान-सम्मान और उसे दी गई भेंटों को दखने के बाद बहुत अधिक दुःख हुआ है, मुझे नहीं न आने का कारण यही है। शकुनि ने उससे कहा कि तुम भी युवराज हो.. जिस प्रकार युधिष्ठिर ने अपने गुणों के आधार पर इतना बड़ा सम्मान प्राप्त किया है तुम भी प्राप्त कर सकते हो.. तुम भी इसके लिए प्रयास करो... मगर दुर्योधन ने शकुनि से कहा कि मामा जी अब तो मैं संसार में जीना ही नहीं चाहता हूं। मेरी जीने की इच्छा ही समाप्त हो गई। या तो मैं किसी सरोवर में डूबकर अपने प्राण त्याग दूंगा या अग्नि में जल जाऊंगा... युधिष्ठिर का वैभव देखने के बाद मैं जीवित नहीं रह सकता हूं... या तो इसका कोई उपाय खोजो कि वह सब धन हमें मिल जाए अन्यथा मैं अपने प्राण त्याग दूंगा... फिर शकुनि ने पांडवों के धन आदि को प्राप्त करने के लिए उनसे छल करने का षड़यंत्र किया था.. युद्ध हुआ और दुर्योधन अपने समस्त बन्धु-बान्धवों के साथ मृत्यु का ग्रास बना।

दुराचारी सदा ही दूसरे के सुख से दुःखी होता रहता है.. वह इसलिए दुःखी कम होता है कि उसके पास किसी वस्तु का अभाव है मगर दूसरे को वह वस्तु प्राप्त क्यों है, वह इस बात से अधिक दुःखी होता है क्योंकि उसके मन में दूसरों के प्रति राग और प्रेम नहीं होता है। यदि हो तो वह स्वयं भी सुखी रहे और दूसरों के सुख में भी सुख अनुभव करे। कहते हैं कि भक्त मीरा कहीं अपना भजन गा रही थी, उन्होंने बहुत ही मगन होकर भावों से डूबकर, आंखे बन्द करके अपना भजन गाया और जब उन्होंने आंखे खोली तो सामने एक वाक्य लिखा हुआ था - राग के में गाओ। मीरा जी चुपके से उठी और राग के आगे अनु लिखकर उस वाक्य को बना दिया - अनुराग में गाओ। आज के समाज में सबसे बड़ी समस्या यही है कि एक-दूसरे पर विश्वास, प्रेम और संवेदना कम होती जा रही है। सदाचार के द्वारा ही इस कमी को पूरा किया जा सकता है, अन्य कोई उपाय नहीं हो सकता है।

दो पल की जिन्दगी है,
इसे जीने के बस दो उसूल बना लो,
रहो तो फूलों की तरह और
बिखरो तो खुशबू की तरह ।।

पता : महादेव, सुन्दरनगर, जिला-मण्डी (हि.प्र.) १७५०१८

विश्व प्रसिद्ध आर्य विद्वान

डॉ. रामप्रकाश शर्मा 'सरस' का नवीन पता

सदस्य, सलाहकार (हिन्दी) रक्षा मंत्रालय, भारत सरकार

बी-२०८, ग्रीन व्यू हाईट्स अपार्टमेंन्ट,

राजनगर एक्सटेंशन, गाजियाबाद

पिन कोड -२०१०१७ (उ.प्र.)

मोबा. : ०९८१०७९६२०३

पुण्य स्मरण

क्रान्तिवीरों का सरताज : चन्द्रशेखर आजाद

२७ फरवरी बलिदान दिवस

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में देश के कई क्रांतिकारी वीर-सपूतों की याद आज भी हमारी रुह में जोश और देशप्रेम की एक लहर पैदा कर देती है। एक वह समय था जब लोग अपना सब कुछ छोड़कर देश को आजाद कराने के लिए बलिदान देने को तैयार रहते थे और एक आज का समय है जब अपने ही देश के नेता अपनी ही जनता को मार कर खाने में तुले हैं।

देशभक्ति की जो मिशाल हमारे देश के क्रांतिकारियों ने पैदा की थी अगर उसे आग की तरह फैलाया जाता तो संभव था आजादी हमें जल्दी मिल जाती लेकिन नरमदल और गरमदल के मतभेदों के कारण आज भी लोग क्रांतिकारियों को वह सम्मान नहीं देते जो उन्हें देना चाहिए था। क्रांतिकारी नेताओं ने कभी भी राजनीति में दखल देने की कोशिश नहीं की और शायद यही वजह है कि लोग उन्हें कम आंकते थे, पर असल मायनों में जो वीरता और पराक्रम की कहानी हमारे देश के वीर क्रांतिकारियों ने रखी थी वह आजादी की लड़ाई की विशेष कड़ी थी जिसके बिना आजादी मिलना नामुमकिन था। देशप्रेम, वीरता और साहस की एक ऐसी मिशाल थे शहीद क्रांतिकारी चन्द्रशेखर आजाद २५ साल की उम्र में भारत के लिए शहीद होने वाले इस महापुरुष के बारे में जितना कहा जाए उतना कम है। अपने पराक्रम से उन्होंने अंग्रेजों के अंदर इतना खौफ पैदा कर दिया था कि उनकी मौत के बाद भी अंग्रेज उनके मृत शरीर को आधे घंटे तक सिर्फ देखते रहे थे, उन्हें डर था कि अगर वह पास गए तो कहीं चन्द्रशेखर आजाद उन्हें मार डालें, वीरता के ऐसे नमूने कम ही देखने को मिलते हैं।

चन्द्रशेखर आजाद का जन्म उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले के बदरका गांव में २३ जुलाई सन् १९०६ को हुआ था। उनके पिता पंडिता सीताराम तिवारी थे। उनके पिता ने अकाल की वजह से उत्तर प्रदेश को छोड़कर अलीराजपुर रियासत के ग्राम भावरा में पलायन किया था। चन्द्रशेखर जब बड़े हुए तो वह अपने माता-पिता को छोड़कर भाग गये और बनारस में अपने फूफा शिवविनायक मिश्र के पास आकर रहने लगे, उनके साथ रहते हुए उन्होंने संस्कृत विद्यापीठ में संस्कृत सीखी। चन्द्रशेखर ने बचपन में ही स्वतंत्रता संग्राम में हिस्सा ले लिया था।

गांधी जी के असहयोग आन्दोलन के दौरान उन्होंने विदेशी सामानों का बहिष्कार किया था। इसी असहयोग आन्दोलन के दौरान उन्हें पहली बार पंद्रह वर्ष की आयु में सजा मिली। उन्हें क्रांतिकारी गतिविधियों में लिप्त पकड़ा गया और जब मजिस्ट्रेट ने उसका नाम पूछा, उन्होने कहा "आजाद" तुम्हारे पिता का क्या नाम है? मेरे पिता का नाम "स्वाधीन" है, तुम्हारा घर कहाँ पर है ? मेरा घर "जेलखाना" है। इस तरह के उत्तर से मजिस्ट्रेट इतना गुस्सा हुए कि उन्होंने बालक चन्द्रशेखर को पंद्रह बेतों की सजा दे दी। कहते हैं चन्द्रशेखर हर बेंत की मार के बाद "भारत माता की जय" नारा लगाते थे। उनकी इस बहादुरी के बाद से ही उनका नाम चन्द्रशेखर "आजाद" पड़ गया। सन् १९२२ में गांधी जी द्वारा असहयोग आन्दोलन को अचानक बन्द कर देने के कारण उनकी विचारधारा में बदलाव आया और वे क्रान्तिकारी गतिविधियों से जुड़कर हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोशियेशन के सक्रिय सदस्य बन गये। इस संस्था के माध्यम से उन्होंने रामप्रसाद बिस्मिल के नेतृत्व में पहले ९ अगस्त १९२५ को काकोरी काण्ड किया और फरार हो गये। बाद में एक-एक करके सभी क्रान्तिकारी

पकड़े गए, पर चन्द्रशेखर आजाद कभी भी पुलिस के हाथ में नहीं आए।

अंग्रेजों से छुपते-छुपाते उन्होने अपनी क्रांतिकारी गतिविधियों को और अधिक सक्रिय बनाने के लिए एक सुदृढ़ क्रान्तिकारी संगठन की स्थापना की। हिन्दुस्तान समाजवादी प्रजातंत्र सेना नामक उनके संगठन में भगतसिंह जैसे महान क्रांतिकारी भी जुड़े थे। धीरे-धीरे चन्द्रशेखर आजाद ने उत्तरप्रदेश के साथ पंजाब में भी अपनी पकड़ बना ली।

साइमन कमीशन के विरोध में जब पंजाब में जगह-जगह लोगों ने प्रदर्शन किया तब पुलिस ने प्रदर्शनकारियों पर बेरहमी से लाठियाँ बरसाई। पंजाब के लोकप्रिय नेता लाला लाजपतराय को इतनी लाठियाँ लगीं की कुछ दिन के बाद ही उनकी मृत्यु हो गई। चन्द्रशेखर आजाद, भगतसिंह और पार्टी के अन्य सदस्यों ने लाला जी पर लाठियाँ चलाने वाले पुलिस अधीक्षक सांडर्स को मृत्युदण्ड देने का निश्चय कर लिया। १७ दिसम्बर १९२८ को चन्द्रशेखर आजाद, भगतसिंह और राजगुरू ने सांडर्स को मार डाला। चन्द्रशेखर आजाद के ही नेतृत्व में भगतसिंह और बटुकेश्वर दत्त ने ८ अप्रेल १९२९ को दिल्ली की केन्द्रीय असेम्बली में बम विस्फोट किए, लेकिन बम विस्फोट के अहम क्रांतिकारियों को पकड़ लिया गया और सुखदेव, राजगुरू और भगतसिंह को फांसी दे दी गई, लेकिन फिर भी चन्द्रशेखर आजाद ने अंग्रेजों को चकमा देकर जगह-जगह जाकर अपनी क्रांतिकारियों गतिविधियों को अंजाम दिया। लेकिन फिर २७ फरवरी १९३१ का वह दिन भी आया जब इलाहाबाद के अल्फ्रेड पार्क में देश के सबसे बड़े क्रांतिकारी को मार दिया गया। २७ फरवरी १९३१ के दिन चन्द्रशेखर आजाद अपने साथी सुखदेव राज के साथ बैठकर विचार-विमर्श कर रहे थे कि तभी वहाँ अंग्रेजों ने उन्हें घेर लिया। चन्द्रशेखर आजाद ने सुखदेव को तो भगा दिया पर खुद अंग्रेजों का अकेले ही सामना करते रहे। अंत में जब अंग्रेजों की एक गोली उनकी जांघ में लगी तो अपनी बंदूक में बची एक गोली को उन्होने खुद को मार ली और अंग्रेजों के हाथों मरने की बजाय खुद ही आत्महत्या कर ली। कहते हैं मौत के बाद अंग्रेजी अफसर और पुलिसवाले चन्द्रशेखर आजाद की लाश के पास जाने से भी डर रहे थे।

चन्द्रशेखर आजाद को वेष बदलने में बहुत माहिर माना जाता था, वह रूसी क्रांतिकारियों की कहानी से बहुत प्रेरित थे। चन्द्रशेखर आजाद की वीरता की कहानियाँ कई हैं जो आज भी युवाओं में देशप्रेम की लहर पैदा कर देती है। देश को अपने इस सच्चे वीर स्वतंत्रता सेनानी पर हमेशा गर्व रहेगा।

- अनिल कुमार आर्य, दुर्ग (छ.ग.)

जीवन में कुछ खोना भी पड़ता है

प्रौढ़ता की उम्र में व्यक्ति के जीवन में काफी गड्ड-मड्ड इकट्ठा हो जाती है। जिंदगी की वह तस्वीर स्पष्ट हो जाती है, जिसे वह गढ़ना चाहता है तो वह इस गड्ड-मड्ड को पहचानने लगता है तथा उसे अपनी जिन्दगी से निकालने का प्रयास करता है। आप उन परिचयों का त्याग कर सकते हैं जो आपका समय बर्बाद करते हैं तथा प्रयासों में बाधा पहुंचाते हैं। और आपको वश में करने की कोशिश करते हैं। नींद में विश्राम के लिए आठ घंटे का समय देना अच्छी बात है। आठ घंटे आपके व्यवसाय से सम्बन्धित कार्यों के लिए पर्याप्त समय है। परन्तु जैसे-जैसे आपकी जीवन पद्धति मजबूत होती जाती है, आपके काम के समय में बढ़ोतरी होती है। बाकी आठ घंटे मूल्यवान हैं। आपको उन्हें विभिन्न कार्यों में बांट देना चाहिए। उनमें से प्रत्येक उस काम के लिए आबंटित होगा जिसे आप करना चाहते हैं। उसके लिए नहीं, जिसे आपको करना ही है। आप क्या करना चाहते हैं ? ठहरों और सोचें। इस प्रकार की तालिका : खेलना, सामाजिक जीवन, लेखन, संगीत, जीविका क्षेत्र के अलग ज्ञान का विस्तार, बागवानी, घर की कार्यशाला में कुछ उपकरण बनाना, नौकायान, सिर्फ बैठे रहना और बादलों या तारों को देखना।

संकलित : जीवन में सफलता कैसे प्राप्त करें .

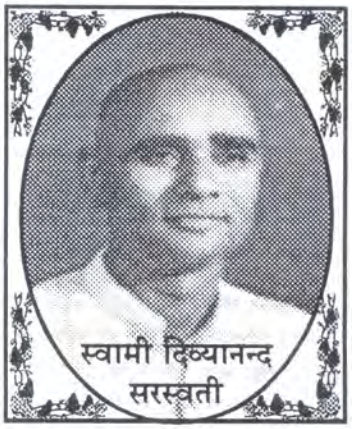

प्रेरक जीवन

जीवनदानी वैदिक मिशनरी
स्वामी दिव्यानन्द

६ फरवरी
पुण्य तिथि

आचार्य तरुण शास्त्री, डी.ए.वी. मोनेट पब्लिक स्कूल, रायपुर

'नीतिवान निन्दा करें या स्तुति, धन प्राप्ति हो या नहीं, आज मृत्यु हो या युगों बाद इन बातों की चिन्ता किए बिना धीर पुरुष न्याय के मार्ग से कभी विचलित नहीं हुआ करते। अर्थात् धैर्यशील धीर पुरुष न्याय के मार्ग अवलम्बन करके उससे कभी भी नहीं हटा करते।' मैं सादर प्रणाम करता हूँ उस वेदोद्धारक महर्षि दयानन्द के अनन्य शिष्य दिव्य गुणों से सुभूषित पूज्य स्व. स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती जी को, जिनकी दिव्य दृष्टि ने छत्तीसगढ़ के सुदूर वनवासी अंचल सरगुजा (अम्बिकापुर) दण्डकारण्य (बस्तर) जैसे पिछड़े क्षेत्रों में व्याप्त अशिक्षा, गरीबी, भूखमरी से पीड़ित वनवासियों की दयनीय दशा को देखा। गरीबी, और भूखमरीके कारण गाँव के लोग किस प्रकार अपने धर्म कोछोड़कर विदेशी ईसाई मिशनरियों के अनुयायी बनते जा रहे हैं इस पूरे घटनाचक्र को निकट से देखा और महसूस किया। विदेशी मिशनरियों की जड़े वनवासियों के चूल्हे चौके तक पहुंच चुकी थी। उनकी सेवा, सहयोग व चिकित्सा से वनवासी प्रभावित थे, लेकिन सेवा की आड़ में धर्मान्तरण के प्रखर विरोधी थे। राष्ट्र भक्त स्वामी दिव्यानन्द जी ने वैदिक संस्कृति भारतीय सभ्यता राष्ट्रभक्ति की महत्ता का प्रचार करके विदेशियों की चाल से कुछ समझदार वनवासियों को अपना बना लिया। स्वामी जी उन्हीं में घुल-मिल गये। एक संस्मरण बहुधा सुनाया करते थे कि एक बार बिहार से लगे रामानुजगंज क्षेत्र में एक रात्रि अचानक एक वनवासी शिक्षक के घर पर ठहरना पड़ा। उस शिक्षक के दो छोटे बच्चे थे रात्रि चर्चा में मालूम पड़ा कि वे ईसाई है। भोजन में बासी परोसी गई। जिस बर्तन में स्वामी खा रहे थे उसी में उक्त शिक्षक के बच्चे भी साथ खाने लगे। यहाँ हिन्दू दरवेश की परीक्षा थी परिणामतः पूर्ववत् निर्विकल्प भाव से बासी खाते रहे प्रातः जब विदा होने लगे तो वह वनवासी शिक्षक भाव विभोर हो चरणों में गिर पड़ा। कहने लगा हिन्दुओं में भी उदार सहृदय साधु हैं ये मुझे मालूम न था। आज से मैं पुनः अपने पूर्वजों के मान्य हिन्दू वैदिक धर्म को अंगीकार करना चाहता हूँ आप मुझे दीक्षा दें। शुद्धि संस्कार द्वारा उस परिवार को हिन्दू धर्म में दीक्षित किया गया। आगे चलकर वह पट्ट शिष्य हो गया। स्वामी दिव्यानन्द जी महाराज का छत्तीसगढ़ आगमन भिलाई के गायत्री महायज्ञ के अवसर पर लगभग १९६० ई. में हुआ। लगभग ३५ वर्ष छत्तीसगढ़ के गांव-गांव एवं कस्बों नगरों- खरोरा, रायखेड़ा, बरतोरी, जर्वे, पथरी, गिर्रा, बलौदाबाजार, लवन, कोर्रा, धमतरी, चूलगहन, मरौद, कुरा, ढाबा, लोहरसी, तिल्दा, दल्लीराजहरा, चरोदा, सगनी, कोहका, भिलाई, कोरबा, रायगढ़, मुड़ागांव, राजगांव, पंगसुवां सलखिया, रायपुर, आदि में वैदिक धर्म का डंका ओ३म् ध्वज का परचम लहराया।

स्वामी जी ने केवल छत्तीसगढ़ अपितु पश्चिम उड़ीसा के ग्रामीण अंचलों में भी वैदिक धर्म का धुआंधार प्रचार किया तथा ऋषि के अमर संदेश, आर्यसमाज के सार्वभौमिक सिद्धान्तों को जन-जन तक पहुंचाया। स्वामी जी वेदों के प्रकाण्ड विद्वान् कुशल वक्ता एवं सर्वतोमुखी प्रतिभा के धनी व्यक्ति थे। रुढ़ियों एवं कुसंस्कारों को दूर करने के लिए आर्यजनों का आह्वान किया परिणाम स्वरुप गांव कस्बों, शहरों के हजारों आर्यजन उनके व्यक्तित्व और विद्वता से आकर्षित होकर आर्यसमाज के अनुयायी बनने लगे अनेकों आर्यसमाजों की स्थापना की, निःसन्देह स्वामी जी का पार्थिव शरीर आज हमारे बीच नहीं है तो भी उनके द्वारा प्रदत्त विचारधारा अन्तः सलिला-सरिता की भांति निरन्तर प्रवाहमान है जो यावत चन्द दिवाकरौ छत्तीसगढ़ी जनमानस को प्रेरणा प्रदान करती रहेगी। स्वामी जी ने मित्रों, आलोचकों की परवाह किए बिना स्वामी दयानन्द के संदेश को, आर्यसमाज के संगठन को आर्यों को आगे बढ़ाया। वे निन्दा-स्तुति से कभी न डरते थे उनके सामने संभवतः भर्तृहरि का यह श्लोक रहा होगा -

निन्दन्तु नीति निपुणाः यदि वा स्तुवन्तु, लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम्।

सामयिक सक्रिय समाजों का कर्त्तव्य

सक्रिय समाजों के अधिकारियों और सदस्यों को चाहिए कि ऐसे महानुभावों को उनके प्रचार के लिए हर सुविधा मुहैया करवाएँ। उनके प्रचार में आनेवाले व्यय की व्यवस्था करवाएँ। प्रचार में कठिनाइयां तो आती ही हैं, विशेषकर गांवों में प्रचार के लिए। जहाँ तक बन पड़े, अधिकारी उनकी सुविधा में यत्नशील होंगे तो प्रचार में सहजता आएगी। सक्रिय समाजों को चाहिए कि पंचायतन-प्रचार के अन्तर्गत पाँच गांवों में प्रचार की जिम्मेदारी लें और उन्हें सतत सक्रिय बनाने के लिए प्रयत्नशील रहें। जिस तरह सरकार मलेरिया-निर्मूलन, कुष्ठ-निर्मूलन या परिवार-नियोजन को सुचारू रुप से पूरा करने के लिए एक स्वास्थ्य केन्द्र के अधीन पाँच गांव गोद लेने के लिए सुनिश्चित करती है, उन रोगों के समूल नष्ट करने के लिए स्वास्थ्य-कर्मचारियों को समय-समय पर हिदायतें देती है, उसी तरह सक्रिय समाजें पाँच गांवों को गोद लेकर केन्द्र के रुप में आर्यसमाज का प्रचार करें तो यह एक सुनियोजित कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रचार होगा।

आर्यसमाजों का पञ्चप्राणों के प्रति कर्त्तव्य

१. सक्रिय और समर्थ समाजों को एक वर्ष में कम से कम पाँच गांवों में आर्य समाज की स्थापना करनी चाहिए। २. इनमें सबसे अनुकूल गांव का चयन कर उसे आदर्श गांव घोषित करना चाहिए। ३. सिर्फ धार्मिक भावना से जुड़ने की बजाय, उस गांव की समस्याओं को सुलझाने का प्रयत्न करना चाहिए। ४. ग्राम स्वच्छता अभियान स्थानिक लोगों की सहायता से पूरा करना चाहिए। ५. प्रत्येक गांव में ग्राम-स्वच्छता के साथ-साथ पाँच परिवारों में यज्ञ करवाकर उन्हें आर्यसमाज की दीक्षा दिलवानी चाहिए। ६. उस परिवार के सदस्यों का यज्ञोपवित-संस्कार कराकर उन्हें आर्य-साहित्य भेंट देना उचित होगा। ७. उपर्युक्त पाँच कार्यकर्ता आर्यसमाज के सदस्य, विद्धान्, वानप्रस्थी, गुरुकुल के स्नातक, प्रवक्ता अथवा पुरोहित हो सकते हैं। ८. उन्हें पञ्चप्राण की उपाधि से विभूषित किया जाना चाहिए। उस तरह पाँच विद्धानों की पञ्चप्राण नाम से नियुक्ति करके हर जिले में सक्रिय समाजें आर्यसमाज का प्रचार-अभियान तेज कर सकती है। यह एक प्रयोगात्मक योजना है। इसको कार्यान्वित करके आर्यसमाजों में प्रचार की योजनाएँ बनानी चाहिए। सक्रिय समाजें और सभाएँ इन पञ्चप्राणों की सहायता से जागृत और सुप्त आर्यसमाजों में प्रचार करवा सकती है। जहाँ आर्यसमाज नहीं है ऐसे गांवों में आर्यसमाजों की स्थापना करवा सकती है।

संकलित (नये युग की ओर आर्यसमाज)

आरोग्य जगत

होमियोपैथी से मलेरिया और डेंगू का उपचार

- डॉ. विद्याकान्त त्रिवेदी
(होमियोपैथिक चिकित्सक)
मोबा. : ९८२६५११९८३, ९४२५१५३३६

मलेरिया सबसे आम संक्रामक रोगों और एक विशाल सार्वजनिक स्वास्थ्य समस्या है । डेंग और चिकनगुनिया कीतरह ही मलेरिया भी मच्छर के काटने से होता है । मलेरिया के परजीवी का वाहक मादा एनोफिलेज मच्छर है । इसके काटने पर मलेरिया के परजीवी लाल रक्त कोशिकाओं में प्रवेश करके बहुगुणित होते हैं जिससे रक्तहीनता (चक्कर आना, साँस फूलना, दुत नाड़ी आदि) लक्षण होते हैं । विश्व में मलेरिया से प्रतिवर्ष ४० से ९० करोड़ बुखार के मामलं का कारण बनता है । वहीं इससे १० से ३० लाख मौते हर साल होती है जिसका अर्थ है प्रति ३० सेकण्ड में एक मौत । इनमें से ज्यादातर पांच वर्ष की आयु के बच्चे एवं युवा होते हैं, वहीं गर्भवती महिलाएँ भी इस रोग के प्रति संवेदनशील होती हैं । संक्रमण रोकने के प्रयास तथा इलाज करने के प्रयासों के होते हुए भी सन् १९९२ के बाद इसके मामलों में अभी तक कोई गिरावट नहीं आयी है । यदि मलेरिया की वर्तमान प्रसार दर बनी रही तो अगले २० वर्षों में मृत्युदर दो गुनी हो सकती है । मलेरिया के बारे में वास्तविक आंकड़े अनुपलब्ध हैं क्योंकि ज्यादातर रोग ग्रामीण इलाकों में रहते हैं, ना तो वे चिकित्सालय जाते हैं और ना उनके मामलों का लेखा-जोखा रखा जाता है । वर्तमान समय में छत्तीसगढ़ शासन ने मलेरिया को रोकथाम हेतु होमियोपैथी औषधियों का वितरण करवाया गया । मलेरिया की रोकथाम हेतु होमियो औषधियाँ अत्यधिक सक्षम एवं कारगर सिद्ध हुई है ।

रोग के लक्षण : मलेरिया के लक्षणों में शामिल है - ज्वर, कंपकंपी, जोड़ों में दर्द, उल्टी, रक्ताल्पता (रक्त विनाश से) मूत्र में हीमोग्लोबिन का उत्सर्जन और उससे गुर्दों में विफलता तक हो सकती है । और दौर मलेरिया का सबसे आम लक्षण हैं, अचानक तेज कंपकंपी के साथ शीतल लगना, जिसके फौरन बाद ज्वर आता है । और दौर मलेरिया का सबसे आम लक्षण है, अचानक तेज कंपकंपी के साथ शीत लगना, जिसके फौरन बाद ज्वर आता है । ४ से ६ घटे बाद ज्वर उतरता है और पसीना आता है । पी. फैल्सीपैरम के संक्रमण में यही पूरी प्रक्रिया ३६ से ४८ घंटे में होती है या लगातार बुखार रह सकता है । पी. विवैक्स और पी. ओवेल से होने वाले मलेरिया में हर दो दिन में बुखार आता है तथा पीमलेरिया से हर तीन दिन में गंभीर मामले लगभग हमेशा पी. फैल्सीपैरम से होते हैं । यह संक्रमण ६ से १४ दिन बाद होता है । तिल्ली और यकृत का बढ़ जाना, तीव्र सिर दर्द और रक्त में ग्लूकोज की कमी, किडनी की विफलता तक हो सकती है । गंभीर मलेरिया से मूर्च्छा या मृत्यु भी हो सकती है । मलेरिया के प्रत्येक १० मरीजों से एक मृत्यु को प्राप्त होता है ।

प्रमुख औषधियां :- सिनकोना, आर्सेनिक, नेट्रम्यूर, नेट्रासल्फ, चिनिनम सल्फ, यूपेटोरियम आदि ।

डेंगू बुखार :- गर्मी के बाद बदलता मौसम बारिश की बूंदी की आहट के साथ आता है । और मानसून के बाद जब मौसम दोबारा करवट लेता है तो ठंडी हवाओं की मीठी चुभन लेकर आता है । लेकिन बदलते मौसम की इन खुशनुमा घड़ियों में ही छुपी है कई बीमारियां । बदलते मौसम में पनपता है एडीज मच्छर जो अपने साथ फैलाता है डेंगू बुखार (हड्डी तोड़) और ये बुखार इतना खतरनाक हो सकता है कि मरीज की जान ले ले । एडीज मच्छर जो काफी ढीठ व दुस्साहसी मच्छ है जो रात के साथ-साथ दिन में भी काटता है और दम निकाल देता है । यह बीमारी योरेप महाद्वीप को छोड़कर पूरे विश्व में होती है । एक अनुमान के मुताबिक प्रतिवर्ष पूरे विश्व में २ करोड़ लोगों को डेंगू बुखार का आक्रमण होता है । मृत्यु दर लगभग एक (१) प्रतिशत मानी गयी है ।

रोग के लक्षण : (१) इसे हड्डी तोड़ बुखार भी

कहते हैं। इसका समय काल ३ दिन तक रहता है पर इतने थोड़े से समय में ही समूचे शरीर में इतना दर्द हो जाता है कि रोगी बिल्कुल तड़फड़ाने लगता है। लगता है कि जैसे मौत सामने खड़ी हो। बुखार १०२-१०६ का. तक चढ़ जाता है। सभी मांसपेशियों में दर्द, जी मितलाना, पित्त का वमन लासिका ग्रंथियों का फूलना शरीर पर खसरे की तरह दाने निकलता लक्षण हैं। इन्हीं लक्षणों के आधार पर होमियो औषधियाँ देने पर कारगर सिद्ध हुई हैं। बीमारी बिगड़ने पर रोगी की मृत्यु तक हो सकती है।

(२) डेंगू की गंभीर स्थिति होने पर कई लोगों को लाल गुलाबी चकते पड़ जाते हैं। डेंगू ज्वर में नाक, मुंह व दांतों में रक्तस्राव के साथ तेज बुखार आता है और मरीज के बुखार का स्तर १०५ डिग्री तक भी जा सकता है जिसका असर सीधे ब्रेन लीवर और किडनी पर पड़ता है। मौसम बदलते ही बीमारियों का आना शुरु हो जाता है। ऐसेमें मच्छरजनित बीमारियाँ अधिक फैलने का खतरा हो जाता है। मलेरिया, चिकनगुनिया और डेंगू ऐसी भी बीमारियाँ हैं जो मच्छर जनित होने के साथ-साथ बदलते मौसम में सबसे ज्यादा पनपती है। डेंगू बुखार एडीस नामक मच्छर के काटने से फैलता है।

प्रमुख औषधियाँ :- *आर्सेनिक, ब्रायोनिया, जेलसीमियम, रसटाक्स, बेलाडोना, यूपेटोरियम, फेरमफास, कालीम्यूर, यूकेलिप्टिस आदि।*

रोकथाम तथा नियंत्रण :- मलेरिया का मच्छर रात को एवं डेंगू का मच्छर रात और दिन में भी काटता है। सबसे पहले मच्छरों के प्रजनन पर नियंत्रण आवश्यक है। मच्छरों के प्रजनन को कम करने के लिए उनके पैदा होने वाले स्थानों को नष्ट करने की कोशिश करनी चाहिए।

गंदगी से बचाव : नालियों की सफाई, मच्छरदानी का उपयोग करना चाहिए। कुशल होमियो चिकित्सक से सलाह लेकर औषधियों का सेवन करना चाहिए।

- **पता** : त्रिवेदी होमियो औषधाल, भारतमाता स्कूल के सामने, टाटीबंध, रायपुर (छ.ग.)

बलिदान दिवस

अग्रिम पंक्ति के सेनानी और प्रखर राष्ट्रवादी नेता- वीर सावरकर

भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन के अग्रिम पंक्ति के सेनानी और प्रखर राष्ट्रवादी नेता थे। उन्हें प्रायः वीर सावरकर के नाम से सम्बोधित किया जाता है। हिन्दू राष्ट्र की राजनीतिक विचारधारा (हिन्दुत्व) को विकसित करने का बहुत श्रेय सावरकर को जाता है। वे न केवल स्वाधीनता संग्राम के एक तेजस्वी सेनानी थे, अपितु महान् क्रान्तिकारी, चिन्तक, सिद्धान्त लेखक, कवि, ओजस्वी वक्ता तथा दूरदर्शी राजनेता भी थे। वे एक ऐसे इतिहासकार भी हैं जिन्होंने हिन्दू राष्ट्र की विजय के इतिहास को प्रमाणिक ढंग से लिपिबद्ध किया है। उन्होंने १८५७ को प्रथम स्वातंत्र्य समर का सनसनीखेज व खोजपूर्ण इतिहास लिखकर ब्रिटिश शासन को हिला कर रख दिया था। २६ फरवरी १९६६ को बम्बई में भारतीय समयानुसार प्रातः १० बजे उन्होने पार्थिव शरीर छोड़कर परमधाम को प्रस्थान किया। वीर सावरकर के ऊपर महर्षि दयानन्द आर्य समाज और सत्यार्थ प्रकाश की कितनी गहरी छाप पड़ी हुई थी। छाप क्यों न पड़ें? इनके गुरु श्री श्यामकृष्ण वर्मा जो महर्षि दयानन्द के पक्के शिष्य थे।

समाचार प्रवाह

आर्यसमाज बड़ेपन्धी (महासमुन्द) में मकर संक्रान्ति महापर्व सोल्लास सम्पन्न

बड़ेपन्धी (महासमुन्द)। आर्यसमाज बड़ेपन्धी (महासमुन्द) के पावन धरा पर आर्यसमाज एवं समस्त ग्रामवासी के तत्वावधान में दिनांक १४ जनवरी २०१८ रविवार को सैकड़ों ग्रामवासियों की उपस्थिति में मकर संक्रान्ति महापर्व अत्यन्त उल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि आचार्य अंशुदेव आर्य सभा प्रधान, विशिष्ट अतिथि माननीय त्रिविक्रम भोज जी पूर्व विधायक, मान. श्याम ताण्डी जी (सभापति जिला पंचायत महासमुन्द), मान. अमृतलाल पटेल जी (ब्लाक कांग्रेस कमेटी अध्यक्ष सरायपाली) रहे। सभा के पदाधिकारी श्री दीनानाथ वर्मा सभा मंत्री, श्री दयाराम वर्मा उपप्रधान सभा एवं प्रधान आर्यसमाज बैजनाथपारा रायपुर एवं श्री चतुर्भुज कुमार आर्य उपमंत्री सभा उपस्थित रहे। प्रातः ७ बजे प्रभात फेरी, प्रातः ८ बजे झण्डोत्तोलन प्रातः ९ बजे यज्ञ एवं भजन, पूर्वान्ह ११.३० अतिथियों का स्वागत एवं दोपहर १ बजे से ऋषि लंगर का भव्य आयोजन रहा। विशेष आकर्षण रात्रि ८ बजे से रात्रि २ बजे तक भजन एवं प्रवचन सम्पन्न हुआ, जिसमें रायपुर से वाद्य यंत्र संगीत आर्केस्टा के साथ श्री मानिकपुरी बन्धु अपनी टीम के साथ उपस्थित थे। आचार्य अंशुदेव आर्य जी का कर्णप्रिय भजन से सभी दर्शक एवं श्रोता अत्यन्त प्रभावित हुये। कार्यक्रम का आयोजन श्री वैष्णव आर्य प्रधान आर्यसमाज बड़ेपन्धी एवं मंच संचालन श्री प्रेमानन्द भोई द्वारा बड़े प्रभावशाली ढंग से किया गया। महर्षि दयानन्द सेवाश्रम टाटीबन्ध रायपुर से पं. संजय शास्त्री के साथ वेदपाठी ब्रह्मचारीगण यज्ञ को भलीभांति सम्पादित किये।

विशेष सहयोगी के रुप में सर्वश्री ताराचंद आर्य, चित्रसेन आर्य, कैलाश साहू, रंजीत आर्य, सन्तोष आर्य, भजनोप्रधान, सहदेव भोई, रेशमलाल सिदार, तरुणीसेन प्रधान, अरुण बाघ, डॉ. उग्रसेन भोई, निलाम्बर कश्यप, विक्रम प्रधान, किशोर प्रधान, दुर्बादल प्रधान, रामलाल प्रधान, टिकाराम पटेल, अभिमन्यु भोई, झसकेतन नायक, रामधन जगत, कंचन भोई, भागरथी साहू, रवि साहू, नन्दू यादव, अर्जुन कुजूर, शंभूनाथ प्रधान, लक्ष्मण पटेल दासरथी यदु रहा।

संवाददाता : श्री दीनानाथ वर्मा, मंत्री

रायपुर शहर में पहलीबार "जीवन निर्माण शिविर" सफलतापूर्वक सम्पन्न

रायपुर। प्रो. जे.एन. पाण्डेय शास. बहु. उच्च. माध्य. विद्यालय रायपुर के भव्य सभागृह में दिनांक १ से ३ जनवरी २०१८ को दर्शनों के प्रकाण्ड विद्वान् पूज्य स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक जी आर्यवन रोजड़ (गुजरात) के पावन सान्निध्य में सम्पन्न हुआ। प्रतिदिन प्रातः ९ से १० बजे एवं संध्या ५.३० से ६.३० बजे तक मधुर संगीत आर्यजगत् के प्रसिद्ध भजनोपदेशक योगेश दत्त बिजनौर द्वारा ***आज क्यों आंखे अश्कों से डबडबाई है, तेरी करनी ही तेरे आगे आज आई है*** सुमधुर भजन सम्पन्न हुआ। पूज्य स्वामी जी का प्रवचन प्रतिदिन प्रातः १० से १२.३० बजे तक एवं संध्या ६.३० से ९ बजे तक सम्पन्न हुआ, जिसमें आह्वान किया गया कि आओ इतिहास दोहराये, वेदों को अपनाएँ। दर्शनों के प्रकाण्ड विद्वान स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक द्वारा इन विषयों - कर्मफल मीमांसा, पुर्नजन्म विवेचन, ज्ञान कर्म उपासना, ईश्वर-जीव प्रकृति एक परिचय, उपासना विधि पर सारगर्भित उद्बोधन दिये। इस कार्यक्रम में सभा प्रधान आचार्य अंशुदेव आर्य, सभा मंत्री श्री दीनानाथ वर्मा, सभा उपप्रधान एवं प्रधान आर्यसमाज बैजनाथपारा रायपुर श्री दयाराम वर्मा, सभा उपमंत्री (कार्यालय) श्री दिलीप आर्य आदि सभा पदाधिकारी उपस्थित रहे।

संवाददाता : श्री दीनानाथ वर्मा, मंत्री

गाय का घास खाकर दूध देना तथा सांप का दूध पीकर जहर उगलना 'स्वभाव' है। इसी प्रकार महात्मा का भला-बुरा सुनकर भी प्रकाश देना 'स्वभाव' है।

तुलाराम आर्य विद्यालय लवन में गणतंत्र दिवस समारोह सम्पन्न

लवन। हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित तुलाराम आर्य हाईस्कूल लवन में ६९वाँ गणतन्त्र दिवस समारोह हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस समारोह के मुख्य अतिथि श्री दीनानाथ वर्मा सभा मंत्री द्वारा ध्वजारोहण कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। भव्य एवं आकर्षक सांस्कृतिक कार्यक्रम विद्यालय के छात्र-छात्राओं द्वारा प्रस्तुत किया गया। इस अवसर पर प्रबंधक श्री रामकुमार वर्मा, प्राचार्य श्रीमती मंदाकिनी ताम्रकार एवं शिक्षक-शिक्षिकाएँ एवं गणमान्य नागरिकगण उपस्थित रहे। - **संवाददाता : प्राचार्य, तु.आ.विद्या. लवन**

तुलाराम आर्य उ.मा. विद्यालय कूरा में गणतंत्र दिवस समारोह सम्पन्न

कूरा। हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित तुलाराम आर्य उ.मा. विद्यालय प्रांगण कूंरा में ६९वाँ स्वतन्त्रता दिवस समारोह हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।

इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री चतुर्भुज कुमार आर्य (सभा उपमंत्री) द्वारा ध्वजारोहण किया गया। इस अवसर पर भव्य एवं आकर्षक सांस्कृतिक कार्यक्रम विद्यालय के छात्र-छात्राओं द्वारा प्रस्तुत किया गया। इस अवसर प्रबंधक श्री सुधीर दुबे, प्राचार्य एवं शिक्षक-शिक्षिकायें एवं गणमान्य नागरिकगण उपस्थित रहे।

- निज संवाददाता

महर्षि दयानन्द आर्य उ.मा. विद्यालय टाटीबन्ध में गणतंत्र दिवस समारोहपूर्वक सम्पन्न

रायपुर। छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित महर्षि दयानन्द आर्य उ.मा. विद्यालय टाटीबन्ध रायपुर में दिनांक २६ जनवरी २०१८ को ६९वाँ गणतंत्र दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया गया, जिसमें मुख्य अतिथि आदरणीय सोमप्रकाश गिरी सभा उपप्रधान एवं पूर्व विधायक मरौद के हाथों ध्वजारोहण किया गया।

कार्यक्रम में डॉ. विद्याकान्त त्रिवेदी समिति के कोषाध्यक्ष, लक्ष्मण प्रसाद वर्मा, केवलकृष्ण बिज, विद्यालय के प्राचार्य श्री विनोद सिंह, उपप्राचार्य श्री पुरुषोत्तम वर्मा, श्री लोकनाथ आर्य प्रबंधक महर्षि दयानन्द सेवाश्रम टाटीबन्ध, श्री संजय शास्त्री एवं विद्यालय के समस्त शिक्षक-शिक्षिकाएँ उपस्थित थे।

विद्यालय के छात्र-छात्राओं द्वारा मार्चपास्ट, व्यायाम प्रदर्शन एवं रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। विद्यालय के प्रतिभावान छात्र-छात्राओं को खेलकूद में प्रथम, द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले छात्राओं को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मान किया गया।

संवाददाता : संजय शास्त्री, टाटीबन्ध रायपुर

महर्षि दयानन्द आर्य विद्यालय टाटीबन्ध रायपुर में आनन्द मेला सम्पन्न

रायपुर। महर्षि दयानन्द आर्य उ.मा. विद्यालय टाटीबन्ध रायपुर में दिनांक १३ जनवरी २०१८ को आनन्द मेला हर्षोल्लास के साथ मनाया गया, जिसका शुभारम्भ छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि के प्रधान आचार्य अंशुदेव जी आर्य के द्वारा किया गया। जिसमें छात्र-छात्राओं ने विभिन्न प्रकार के निर्मित व्यजंनों का रसस्वादन करते हुए लगभग सुबह १० बजे से ३ बजे तक रहा। इस अवसर पर सभा के पदाधिकारी, समिति के पदाधिकारी एवं प्राचार्य एवं शिक्षिक-शिक्षिकाएँ व छात्र उपस्थित रहे। **निज संवाद.**

सभा कार्यालय में गणतंत्र दिवस सम्पन्न

दुर्ग। छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, विद्युत सुरक्षा विभाग, आर्यसमाज आर्यनगर दुर्ग के संयुक्त तत्वावधान में दयानन्द परिसर प्रांगण में ६९वाँ गणतंत्र दिवस के अवसर पर प्रातः ९.०० बजे ध्वजारोहण का कार्यक्रम सभा कार्यालय में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर सभा उपमत्री (कार्यालय) श्री दिलीप आर्य, पं. उद्धव शास्त्री, आचार्य राममुनि, सभा कार्यालय के कर्मचारी, विद्युत सुरक्षा विभाग के अधिकारी एवं समस्त कर्मचारी व अन्य कार्यकर्तागण मुख्य रुप से उपस्थित रहे। - ***निजी संवाददाता***

किलकिलेश्वर धाम किलकिला (जशपुर) में वेद प्रचार एवं विश्व कल्याण महायज्ञ सम्पन्न

किलकिला-पत्थलगांव (जशपुर) । दिनांक १८ जनवरी २०१८ को पत्थलगांव स्थित किलकिलेश्वर धाम किलकिला में महिला मंडल पत्थलगांव एवं समस्त महानुभावों के अथक प्रयास से एक दिवसीय विश्वकल्याण महायज्ञ एवं वेदकथा का कार्यक्रम हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम का शुभारम्भ माननीया श्रीमती कौशल्या साय बगिया (धर्मपत्नी मान. श्री विष्णुदेव साय जी, केन्द्रीय मंत्री) के करकमलों द्वारा दीप प्रज्वलन कर किया गया। महायज्ञ का सम्पादन पं. उद्धव प्रसाद शास्त्री पुरोहित, आचार्य राममुनि जी वानप्रस्थी के ब्रह्मत्व में किया गया। मुख्य यजमान के रुप में श्री खिरोधर प्रसाद बेहरा एवं श्रीमती भुनेश्वरी बेहरा जी उपस्थित रहे। तत्पश्चात कोरबा से पधारे डॉ. ओममुनि वानप्रस्थी जी द्वारा मधुर भजन एवं संगीत के माध्यम से जनमानस को आर्ष सिद्धान्तों से अवगत कराया गया तथा जो वास्तविक धर्म वैदिक धर्म है उसके विषय में बोध कराया गया। भजन व प्रवचन श्रृंखला में दुर्ग से पधारे उभरते वैदिक भजनोपदेशक पं. ऋषि आर्य (वेद विभूषण यजुर्वेद) के द्वारा मधुर संगीतमय वेद कथा एवं ऋषि दयानन्द के द्वारा बताये गये पञ्च महायज्ञों की व्याख्या कर आगन्तुक महानुभावों को यज्ञ करने का संकल्प करवाया गया। ब्र. अनिल आर्य जी का मानव विकार संबंधी क्लेश दर्शन पर सारगर्भित उद्बोधन हुआ। कार्यक्रम के मध्य में ग्राम ढाप से पधारे ओड़िया संगीतज्ञ श्री डिग्रीलाल आर्य जी द्वारा ओड़िया में आर्ष सैद्धान्तिक चर्चा, पाला गायन के माध्यम से जनमानस को लाभान्वित किया गया। कार्यक्रम का सफल संचालन महिला संगठन पत्थलगांव से श्रीमती पुष्पा शर्मा, श्रीमती पूनम मिश्रा श्रीमती राधाबाई ने किया।

इस एक दिवसीय महायज्ञ के अवसर पर अति विशिष्ट अतिथि के रुप में सभा के उपमंत्री (कार्यालय) श्री दिलीप आर्य जी, गुरुकुल आश्रम सलखिया के वानप्रस्थीगणों सहित आचार्य जगबन्धु शास्त्री भी मुख्य रुप से उपस्थित थे। कार्यक्रम का समापन आर्य जयघोष तथा शांतिपाठ के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। *- संवाददाता : आचार्य जगबन्धु शास्त्री*

मुस्लिम स्कूल में गूंजते हैं श्लोक और वैदिक मंत्र

अहमदाबाद। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के गृह राज्य गुजरात के बड़ोदरा में मुस्लिमों द्वारा संचालित एक स्कूल ऐसा है, जहां उर्दू, अरबी या फारसी में पढ़ाई नहीं होती, बल्कि यहां श्लोक और वैदिक मंत्र गूंजते हैं। इस अनोखे स्कूल में बच्चे संस्कृत में पढ़ाई करते हैं। खास बात यह है कि यहां लड़कियां भी संस्कृत में ही पढ़ाई कर रही है। मुस्लिम एजुकेशन सोसायटी (एमईएस) के इस स्कूल में सहशिक्षा की शुरुआत हाल ही में की गई है।

१४६ ने चुना संस्कृत : इस बार क्लास ९वीं के ४० फीसदी से ज्यादा छात्रों ने संस्कृत विषय लिया है। कुल ३४८ छात्रों में से १४६ ने संस्कृत मुस्लिम हैं। ज्यादातर छात्र १०वीं और १२वीं बोर्ड एग्जाम में भी संस्कृत रखेंगे।

मुस्लिम शिक्षक : यहां मुस्लिम शिक्षक ही संस्कृत पढ़ाते हैं। शिक्षक आबिद अली और मोइनुद्दीन १९९८ से यहां पढ़ा रहे हैं। आबिद बताते हैं कि संस्कृत समर्पण के साथ पढ़ाई जाती है।

गुजरात में एक स्कूल ऐसा भी

छात्रों को भी है संस्कृत से लगाव :

यहां आने वाले छात्रों को भी संस्कृत से काफी लगाव है। १०वीं क्लास की एक छात्रा पठान उजमा बानों संस्कृत का शिक्षक बनने का सपना देखती है। उजमा के मुताबिक, संस्कृत से हमें अपने देश की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर के बारे में पता चलता है। वेद पढ़ने, श्लोक का उच्चारण करने और अपने इतिहास को समझाने में आनन्द आता है। वहीं एक और छात्र मोहम्मद ओसामा ने बताया कि उन्होंने ५वीं कक्षा से ही संस्कृत पढ़ने की शुरुआत की थी।

शुरुआत से ही संस्कृत : प्रिसिंपल एम.एम. मलिक ने बताया कि स्कूल की स्थापना से ही यहां संस्कृत पढ़ाई जाती है। ९वीं, १०वीं में फारसी, उर्दू, अरबी-संस्कृत में एक भाषा चुननी होती है। *- साभार : पत्रिका*

'शोभायात्रा के गीत' शीर्षक ग्रन्थ का लोकार्पण

आमसेना। गुरुकुल आश्रम आमसेना (उड़ीसा) की स्वर्ण जयन्ती महोत्सव के अवसर पर अध्यात्म पथ के यशस्वी सम्पादक आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी की **शोभायात्रा के गीत** नामक पुस्तक का लोकार्पण पतंजलि विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य बालकृष्ण जी के कर कमलों से सम्पन्न हुआ। इस पुस्तक में प्रभातफेरी, शोभायात्रा, ऋषि दयनानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द, आर्यसमाज के स्थापना दिवस आदि के पावन अवसरों पर गाये जाने वाले प्रेरक एवं आत्मोत्कर्ष परक गीतों का अनूठा संग्रह है। पुस्तक का लोकार्पण करते हुए आचार्य बालकृष्ण जी ने गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के महत्व, उस शिक्षा की आवश्यकता और वर्तमान समय में गुरुकुलों के विस्तार पर बल दिया।

मंचस्थ गणमान्य विद्वानों ने शोभा यात्रा के गीत शीर्षक पुस्तक के संकलन कर्ता एवं सम्पादक आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री की इस उत्तम कृति के लिए बधाई दी। इस शुभ अवसर पर स्वामी धर्मानन्द सरस्वती, स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती जी, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी, स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, आचार्य विजयपाल सिंह, श्री सुदर्शन भगत जी (केन्द्रीय राज्य मंत्री) ठाकुर विक्रमसिंह जी (अध्यक्ष राष्ट्र निर्माण पार्टी), कैप्टन रुद्रसेन सिन्धु जी (प्रधान गुरुकुल न्यास) आदि गणमान्य लोग मंच पर शोभायमान थे।

- संवाददाता : डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया, साहित्य सम्पादक

घटोई जलाशय में मकर संक्रान्ति एवं कृषि मेला सम्पन्न

कांसा। आर्यसमाज कांसा के तत्वावधान में घटोई जलाशय कांसा में आचार्य रणवीर आर्य उपमंत्री सभा के अथक प्रयास से १४ जनवरी १८ को मकर संक्रान्ति पर्व एवं कृषक सम्मान समारोह हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में यज्ञ, भजन व सत्संग का कार्यक्रम आयोजित किया गयाा। इस अवसर आर्यसमाज कांसा के प्रधान, मंत्री व अन्य पदाधिकारी, सदस्यण सहित लगभग दो हजार लोगों ने भाग लेकर कार्यक्रम को सफल बनाया।

संवाददाता : आचार्य रणवीर आर्य, कांसा

घोषणा - पत्र

(फार्म - 4 नियम - 8)

❖	प्रकाशन का स्थान	- दुर्ग (छ.ग.)
❖	प्रकाशन की अवधि	- मासिक
❖	भाषा	- हिन्दी
❖	मुद्रक का नाम	- आचार्यअंशदेव आर्य छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा दुर्ग (छ.ग.)
	क्या भारत का नागरिक है	- हाँ
❖	प्रकाशक का नाम	- आचार्य अंशुदेव आर्य छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
	क्या भारत का नागरिक है	- हाँ
❖	सम्पादक का नाम	- आचार्य कर्मवीर
	क्या भारत का नागरिक है	- हाँ
	पता	- छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्य नगर, दुर्ग (छ.ग.)
❖	उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हो तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार है।	- छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा

मैं आचार्य अंशुदेव आर्य, प्रधान, छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य है।

हस्ताक्षर

आचार्य अंशुदेव आर्य

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा

आर्य पर्वों की सूची

विक्रमी संवत् २०७३–२०७४ तद्नुसार सन् २०१७ ई.

क्र.	पर्व नाम	चन्द्र तिथि	सम्वत्	अंग्रेजी तिथि	दिवस
१.	लोहड़ी	माघ कृष्ण १२	२०७४	१३-०१-२०१८	शनिवार
२.	मकर संक्राति	माघ कृष्ण १३	२०७४	१४-०१-२०१८	रविवार
३.	बसन्त पंचमी	माघ शुक्ल ५	२०७४	२२-०१-२०१८	सोमवार
४.	गणतंत्र दिवस	माघ शुक्ल ६	२०७४	२६-०१-२०१८	शुक्रवार
५.	सीताष्टमी	फाल्गुन कृ. ८	२०७४	०८-०२-२०१८	गुरुवार
६.	महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव (ऋषि पर्व)	फाल्गुन कृ.-१०	२०७४	१०-०२-२०१८	शनिवार
७.	ऋषिबोधोत्सव (शिवरात्रि)	फाल्गुन कृ. -१३	२०७४	१३-०२-२०१८	मंगलवार
८.	लेखराम बलिदान दिवस	फाल्गुन शु.-३	२०७४	१८-०२-२०१८	रविवार
९.	नवसंस्येष्टि (होली) मिलन पर्व	फाल्गुन पूर्णिमा	२०७४	०१-०३-२०१८	गुरुवार
१०.	नवसम्वतसराम्भः (आर्यसमाज स्थापना दिवस)	चैत्र शुक्ल - १	२०७५	१८-०३-२०१८	रविवार
११.	रामनवमी	चैत्र शुक्ल- ९	२०७५	२५-०३-२०१८	रविवार
१२.	बैशाखी	बैसाख कृ. -२	२०७५	१३-०४-२०१८	शुक्रवार
१३.	हरि तृतीया (हरियाली तीज)	श्रावण शु.- ३	२०७५	१३-०८-२०१८	सोमवार
१४.	स्वतंत्रता दिवस	भाद्रपद कृ. ८	२०७५	१५-०८-२०१८	बुधवार
१५.	रक्षा बंधन (श्रावणी उपाकर्म) } वेद प्रचार	श्रावण पूर्णिमा	२०७५	२६-०८-२०१८	रविवार
१६.	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी } सप्ताह	भाद्रपद कृ. ८	२०७५	०३-०९-२०१८	सोमवार
१७.	दशहरा (विजयादशमी)	आश्विन शु. १०	२०७५	१९-१०-२०१८	शुक्रवार
१८.	गुरुवर स्वामी विरजानन्द जन्मदिवस	आश्विन शु. १२	२०७५	२१-१०-२०१८	रविवार
१९.	दीपावली (ऋषि निर्वाणोत्सव)	कार्तिक अमावस्या	२०७५	०७-११-२०१८	बुधवार
२०.	स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस	पौष कृष्ण १	२०७५	२३-१२-२०१८	रविवार

विशेष टिप्पणी : १. आर्य समाजें इन पर्वों को उत्साहवर्धक मनाएँ। २. देशी तिथियों में घट बढ़ होने से पर्व तिथि में परिवर्तन हो सकता है।

अग्निदूत के ग्राहक सदस्यों की सेवा में

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के मासिक मुख पत्र **'अग्निदूत'** के समस्त ग्राहक सदस्यों से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क १००/- यथाशीघ्र सभा कार्यालय को भेज दें, जिससे कि उन्हें नियमित रूप से 'अग्निदूत' भेजा जाता रहे। जिन सदस्यों के शुल्क तीन वर्षों से अधिक बकाया हो, उनसे निवेदन है कि वे अपना दसवर्षीय शुल्क ८००/- रु. भेजें। इस कार्य को यथाशीघ्र प्राथमिकता से करें। अन्यथा **इस मास से अग्निदूत भेजना बंद कर दिया जायेगा।** पत्र व्यवहार में अपना सदस्य संख्या तथा पूरा पता पिन कोड सहित अवश्य लिखें। **छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का भारतीय स्टेट बैंक दुर्ग शाखा में सेविंग एकाऊन्ट नं. : 32914130515, आई.एफ.एस.सी. SBIN0009075 कोड नं. अथवा देना बैंक दुर्ग शाखा में सेविंग एकाऊन्ट नं. 107810002857 आई.एफ.एस.सी. BKDN0821078 है, जिसमें आप किसी भी भारतीय स्टेट बैंक/देना बैंक की शाखा से आनलाईन शुल्क जमा कर सभा कार्यालय के दूरभाष नं. 0788-4030972 द्वारा सूचित करते हुए या अलग से पत्र लिखकर अवगत कर सकते हैं। अग्निदूत मासिक पत्रिका के सम्बन्ध में कोई भी शिकायत हो तो कृपया श्रीनारायण कौशिक को चलभाष नं. 9770368613 में सम्पर्क कर सकते हैं।**

– दीनानाथ वर्मा, मंत्री मो. 9826363578

कार्यालय पता : 'अग्निदूत', दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग (छ.ग.) 491001, फोन : 0788-4030973

महर्षि दयानन्द आर्य उ.मा. विद्यालय टाटीबन्ध में सम्पन्न गणतंत्र दिवस समारोह की झलकियाँ

CHH-HIN/2006/17407 फरवरी 2018 डाक पंजी. छ.ग./दुर्ग संभाग / 99/2015-17
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लायसेंस नं. : TECH/1-170/CORR/CH-4/2017-18-19

भारत

के व्यंजनों का आधार,
है, एम.डी.एच. मसालों से प्यार।

MDH
मसाले
असली मसाले
सच-सच

सदस्य क्र. 206
आर्य संदेश (साप्ताहिक)
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा-15
हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

हाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड
ESTD. 1919 9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली -110015, 011-41425106-07-08 www.mdhspices.com

सम्पादक प्रकाशक मुद्रक आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग के वैदिक मुद्रणालय से छपवाकर प्रकाशित किया गया।
प्रेषक : "अग्निदूत", हिन्दी मासिक पत्रिका, कार्यालय, छ.ग. प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग (छ.ग.) 491001